॥ प्रस्तावना ॥

गाथा-लब्भंती विउला भोए। लब्भंती सुरसंप्पया॥
लब्भंती पुत्त मित्तंच । एग्यो धम्मों दुर्लभइ॥

इस चराचर विश्वमें इस जीवको विपुल विस्तीर्ण भोग देवताकी सपदा और पुत्र मित्रादी स्वजन इत्यादी समुग्रही अनंती वक्त मिलगइ, और मिमिलनी सहज हैं, परंतु एक धर्मकी प्राप्ती होनी-ही मुशकिलहै इस लिये जिन्न सुल्लभ बौधियोंकों महान पून्योदयसे सत्यधर्मकी प्राप्ति हुइ है, उन को चाहिये कि विशेष नहीं बने तो अष्ठ प्रहरमें एक घंटा तो अवश्य मेव(जरूरही)धर्म कार्यमें-लगना ही लगना.

एक मुहूर्त (४८) मिनट) की धर्म क्रियाको जैनी लोक " सामायिक व्रत " कहते है यह वृत आत्माको समभाव में लाताहै, अनुपम व अमिश्र आनन्दकी वानगी (Specimen of une-

bualled and unmixed joy) देता है परंतु कितनेक लोक " सामायिक व्रत " धारन कर, धीकथा आदि अनेक अयोग्य व्यवहारमें फस मनको स्थिर नहीं रख सक्ते हैं यह प्राप्त हुये महा लाभको व्यर्थ गमा देते हैं, उनके मनको स्थिर करनेके लिये यह नित्य स्मरण "और "केवलानंद छ न्दावली " नामकी पुस्तक बनाके जिनोंने जैन सिंघपे उपकार किया है उनका जीवन चरित्र संक्षेपमें दा देना योग्य हैं

मारवाड देशके मेडते ग्रामके रहीस बडे साथ ओंसवाल ज्ञाती कॉसटीया गौत्रके सेठ कस्तुरचंदजी व्योपार निमित मालवेके आस टे ग्राममें आ रहे उनका अकस्मात मृत्यू होने से उनकी सुपत्नी जवाराबाई चार पुत्र को छोड साधुमार्गी पंथमे दिक्षा धारण करी माता पिता और पत्नीके वियोगसे दुखी हो कवलचंदजी भोपाल आ रहे और पिता

कै धर्मानुसार मंदिर मार्गी कैं पंच प्रति क्रमण नवस्मरण, पूजा वगैरे, कंठाग्र किये उस वक्त सनातन जैन धर्म (साधुमार्गी) के परम पुज्यश्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके महामुनि श्री कुंवरजी ऋषिजी महाराज पधारे तब भाइ फूलचंदजी धाडीवाल के· वलचंदजीको जबरदस्तीसे व्याख्यानमें लेगये उसवक्त महाराज श्री सुयगडांगजी सूत्र १ श्रतस्कंध १ अध्येयन ४ उदेसे की १० मी गाथाका अर्थ समजारहेथेकी, ज्ञान पानेका येही सार है कि किंचित मात्र हिंसा नहीं करनी अहिंसा धर्म सब मतांतरी कबूल करते हैं, परं वैसी प्रवृती करे वोही सच्चे· इत्यादि सुण केवल चंदजी हमेशा आना सूरु किया और शनैः शनैः प्रतिक्रमण पच्चीस बोलका थोकडे वगैरे अभ्यास करते २ दिक्षा लेनेके भाव हुवे परन्तु भोगवली कर्मोदयसे स्वजनोने

जबरदस्ती नेदीग्रामनके शेठ छोटमेलजी टाटीयाकी पुत्री फुलासइबाके साथ लग्न किया, और वोभी दो पुत्रको छोड मरगई तब पुत्र पालनार्थ स्वजनोंकी प्रेरणासे तीसरा ब्याव करने मारवाड जाते रस्तेमें पुज्य श्री वख्त सागरजी महाराजके दरशन करने रतलाम उत्तेर वहां अनेक श्रावकके जाण भरयुवामीमें सजोड ब्रम्हचर्य धारनेवाले भाइजी किस्तूरचंदजी मिले, और कहने लगे "जहरका प्याला सहजही ढुलगया, पुनः उसे भरने क्यों तैयार होत हो" यों कहते पुज्यश्रीके पास लेगये पुज्यश्रीमें फरमाया की "एक वखत वैरागी बनतेथे अब वमडे (वर) बनने तयार हुवे क्या?" ऐसा बोध सुन केवलचंदजी ब्रम्हचर्य व्रत धारण कर भोपाल आये, और दिक्षा लेनेका विचार स्वजनको दरशाया, सवा महिना 'भिक्षाचरी' कर भक्षा ले ११ वर्षकी उम्मरमे

स० १९४३ चैत्र सूदी ५ को मुनीराज श्री पुनाऋषीजीके पास दिक्षा ले पुज्यश्री खूबा ऋषिजी महाराके शिष्य हूय. ज्ञानाभ्यास कर तपस्या प्रारंभ करी तपस्याके थोक, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ १७, १८, १९, २०, २१, ३०, ३१, ४१, ५१, ६१, ६३, ७१, ८१, ८४, ९१, १०१, १११, और १२१ इस तपमे छाछ, सूठ, कालालूग, भुंघणेकी तंबाखू, और पाणी ये द्रव्य लेतेये और छे महीनेकी एकांतर वगैरे छुट्टक तपस्या बहुत सी करी हैं महराज श्री मालवा मेवाड मारवाड सींथवाड ढुंढाड हा डोती पूर्व पंजाब बागड सोरठ झालावाड गुजरात दक्षिण आदिदेश फरसते २ हमारे सुभाग्यसे स० १९६२ की साल क्षुधा त्र षादि अनेक दुष्कर परिसह सहन करते तीन ठाणे श्री (केवलऋषिजी श्री अमोलखऋषिजी

और श्रीसुखाऋषीजी) हैदराबाद पधारे (की यहां अव्वल कोइभी जैन साधू नहीं पधारेथे) चार कमान मवकोटी मकानमें विराजमान हुवे श्री सुखाऋषिजीकी बिमारीके कारणसे चौमासा उतरे बाद विहार न हुवा और फागण वदी १ ' को श्री सुखाऋषिजी स्वर्गस्थ हुये फिर उष्णऋतु और बीकट रस्तेके कारणसे श्री सिंघने महाराज श्रीको विहार न करने दिया अत्यंत अग्रह से दूसरा चतुर्मास यहा कराया दुसरे चतुर्मासमें श्रीकेवलऋषीजी महाराज उपरा उपरी बिमारीसे और वृद्ध अवस्थासे विहार न होता देख, श्रीसिंघने महाराजको स्थिरवास विराजनेकी बिनंती करी महाराज श्री सात वर्षसे यहा विराजते हैं सदौसे में छवों साधू मार्गी बनाये और अनेक सुधारे किये हैं

महाराज श्री केवल ऋषिजीकी चमाइ

हुइ कविता सुणके वहुत जनोने ग्रहण करने की इच्छा दरसाइ परन्तू तपश्वीजीका मन प्रसिद्दीमे आनेका नहीं देखा तब मैने वाल ब्रम्हचारी मुनी श्री अमुलख ऋषिजीसे याचना करी· उनने कृपाकरके जितनी कवीता मूझे दी उसका संग्रह कर यह छोटीसी पुस्तक छपवा मेरे स्वधर्मी भाइयोंको समर्पण करता हूं

ले· लाला, सुखदेवसाहाजी ज्वालाप्रशाद

विषयानुक्रम

"नित्य स्मरण"

'केवलानन्द छन्दावली'

श्रीमान सरदारचंदजी संतोषचंदजी
सिंघवी नागोर की ओरसे सादर भेट,

॥ श्री नवकार महामंत्र * ॥

॥ १ ॥ णमो अरिहंताणं ॥

॥ २ ॥ णमो सिद्धाणं ॥

॥ ३ ॥ णमो आयरियाणं ॥

॥ ४ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥

॥ ५ ॥ णमो लोए, सव्व साहुणं ॥

* विधिः शुद्ध धोती और दुपट्टा अपने पास रख, बाकी सब कपडे दूर रख, एकांत स्थानमें पूजनीसे पूंज, बेठका बिछा, मुहपति मुखपर बांधकर यह नमस्कार मंत्र जपना

॥ सम्यक्त्वकि तीन तत्वका पाठ ॥

॥ आर्या वृतम् ॥

अरिहंतो महद्देवो । जाव जीव सूसाहू णो गुरुण ॥ जिण पण्णत्त तत्तं । एए सम्मत्तं मए गहियं ॥१ पञ्चिन्दिय संवरणो । तह नव विह बंभचेर गुत्ती धरो ॥ चउविह कषाय मुक्को । इह अठारस्स गुणेहि सजुत्तो ॥२॥ पंच महव्वय जुत्तो । पंच विहायार पालण समत्था ॥ पंच समिइ तिगुत्तो । छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥३॥

वंदनाका पाठ

तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण वंदामि, नमंसामि सक्कारेमि, सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं, देवयं चेइयं पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि सम्प्रमाना ई श्री महाराजजी साहब

॥ सामायिक सूत्र विधी युक्त ॥

☞ [प्रथम नवकार मंत्र और तीन तत्वका पाठ पढकर फिर " तिख्खुत्ता " के पाठ से वदना कर कर फिरः—]

इच्छा कारणका पाठ कहना:-

आवश्यइ इच्छा कारण संदेह सह भगवान इरिया वहीयं पडिक्कसामि, इच्छं इच्छामि पाडिक्कमिउ इरिया वहीयाए विरह णाए गमणा गमणे, पाण संक्कणे, बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसाउतिंग, पणग दग, मट्टी मक्कडा, संताणा संक्कमणे, जे मे जीवा वीराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेंदिया च-उरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्ति या, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया किलामिया, उद्दाविया, ठाणाऊठाणं, संका

मिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कड

फिर "तस्सउत्तरी" का पाठ कहना,

तस्सउत्तरी करणेण, पायच्छित करणेण, विसोही करणेण, विसल्लि करणेण, पावार्ण कम्माणं, निग्घायणठाए, ठामी काउस्सग्गं, अन्नथ्थउसीसएण, निससीएणं, खासिएण, छीएणं, जभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहीं अगसचालेहिं सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं, एवम इएहिं आगारेहिं, अभग्गा, अविराहिओ, हुजमे काउस्सग्गा, जाव अरिहनाण, भगवताणं, नमोक्कारेण, नपारमि तावकायं ठाणेण, माणेणं झाणेण, अप्पाण वासिरामि ॥

॥ अथ हारियावहि और एक नम

कार " का काउस्सग्ग मनमें करना और नमो अरिहंताणं ऐसा बोलके काउसग्ग पारना; फिर—

लोगस्सका पाठ कहना.

(अनुष्टुप वृतम्.)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरेजिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥

(आर्या वृतम्.)

उसभ—माजियं च वंदे, संभव मभिनंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, शिअल सिज्जंच, वासुपुज्जंच ॥ विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथू अरं च मल्लिं, वंदे मुनि सुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिठनेमि, पासंतह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवमंए अभिथ्थुया, विहुय रयमला, प-

हीण जर मरणा ॥ चऊवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पासियसु ॥ ५ ॥ कितिय वंदिय महिया, ज ए लोग्गस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तम दिंतु। ६ । चदेसू निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास यरा, सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

☞ अब खड़ा होकर तिक्खुत्ताका पाठ नीमचार विधी सहित पढकर वंदना करकर गुरु आदिककी पास सामायिक की आज्ञा मंगना गुरु आदिक न होनसे पूर्व तथा उत्तर दिशाकी सफ खड़ा होकर श्री सीमंधरस्वामी की आज्ञा मंगकर सामायिक आदरना

सामायिक ग्रहण करनेका पाठ

करेमिभंते सामाइय सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियम पज्जुवासामी, दुविहं तिविहेण न करेमी नकारवेमी, मनसा वा

यसा, कायसा; तस्सभंते, पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

☞ फिर नीचे बेठ डावा गोडा ऊभा रख उसपर दोनो हाथ जोडकर

नमोथ्थुणं का पाठ कहना.

॥ नमोथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पूरिसवर पुंडरियाणं, पुरिसवर गंधहथ्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चख्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसाराहिणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं, दीवो, ताणं, सरणगइ पइठा, अप्पाडिहयवरनाणं, दंसण धराणं, वियट छउमाणं,

जिणाणं, जावयाण तिन्नाणं, तारयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताण, मोयगाणं, सव्वनूण सव्वदरिसिण, सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह मप्पुणराविति, सिद्धि गइ, नाम धेयं, ठाण सपत्ताण, नमोज्जिणाण, जियभयाणं ॥ (दुसरेमें) ठाण सपाविउ कामस नमो जिणाण

☞ विधि –पिछे स्थिर चितसे नामस्मरण, शास्त्र श्रवण मनन करना जब सामायिक पारन का वक्त होवे तब इरियावही तस्स उतरी की पाटी कहना और इरियावहीका काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स कह दो वार नमोत्थूणं कहना फिर नीचे मुजब पाटी कहना—

सामायिक पारनेकी पाटी

एहवा नवमा सामायिक व्रतका पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, त

जहा ते आलोउं, मणदुप्पडिहाणे, वयदुप्प-डिहाणे. कायदुप्पडिहाणे, सामाइयस्सइ अकरणयाए, सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स क-रणयाए तस्समिच्छामिदुक्कडं.

सामायिकं समकाएणं, फासियं, पा-लियं, सोहियं, तिरियं, किट्टियं, आराहियं अणुपालियं, आणाए अणुपालिता नभवइ, तस्स मिच्छामि दूक्कडं.

समायिक में दश मनका दशवचन-का, बारे कायाका, यह बत्तीस दोषमेंसे जो कोइ दोष लगाहोवे तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

सामायिकमें स्त्री कथा, भक्त कथा, देश कथा, राजकथा ये चार कथामेंसे जो

कोइ कथा की गई होवे तो तस्स मिछामि दुक्कड

सामायिक मत विधिसें लिया, विधिसे पारा, विधि करनेमें अविधि हो गई होवे तो, तस्स मिच्छामि दुक्कड

सामायिकमें अतिक्रम, व्यतिक्रम अति चार, अणाचार, आणमें अजामें, मनसे वचनसे कायासे जो कोई दोष लगा होवे, तो तस्स मिच्छामि दुक्कड

सामायिकमें कानो, मात्रा, मींदी, पद अक्षर कमी ज्यादा, विपरित पाठ होवे तो अनता सिद्ध केवली भगवतकी साखे तस्स मिच्छामि दुक्कड

☞ फिर तीन नवकार मत्र पढन

श्री अनुपूर्वी (१)

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

श्री अनुपूर्वी (२)

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

श्री अनुपूर्वी (३)

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

श्री अनुपूर्वी (४)

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

॥ अनुपूर्वी ( )

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

॥ अनुपूर्वी (६)

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	३	१	३	४

॥ अनुपूर्वी ( )

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
[illegible]	१	३	[illegible]	[illegible]
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	३	१	[illegible]	[illegible]

॥ अनुपूर्वी (८)

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

श्री अनुपूर्वी (९)

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

श्री अनुपूर्वी (१०)

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

आ अनुपूर्वी (११)

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

श्री अनुपूर्वी (१२)

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

श्री अनुपूर्वी (१३)

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

श्री अनुपूर्वी (१४)

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

श्री अनुपूर्वी (१)

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	१	१	३	२

श्री अनुपूर्वी (११)

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

श्री अनुपूर्वी (१७)

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	३

श्री अनुपूर्वी (१८)

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

श्रा अनुपूर्वी (१९)

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

श्री अनुपूर्वी (२०)

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

२४ तीर्थंकरोंके नाम

१ श्री ऋषभदेवजी (अपरनाम श्री आदिनाथजी)

२ श्री अजीतनाथजी

३ श्री संभवनाथजी

४ श्री अभिनंदनजी

५ श्री सुमतिनाथजी

६ श्री पद्मप्रभुजी

७ श्री सुपार्श्वनाथजी

८ श्री चंद्रप्रभजी

९ श्री सुविधिनाथजी (अपरनाम श्री पुष्पदंतजी)

१० श्री शीतलनाथजी

११ श्री श्रेयांसनाथजी

१२ श्री वासुपूज्य नाथजी

१३ श्री विमलनाथजी

१४ श्री अनंतनाथजी

१५ श्री धर्मनाथजी

१६ श्री शांतिनाथजी

१७ श्री कुंथुनाथजी

१८ श्री अर्हनाथजी

१९ श्री मल्लीनाथजी

२० श्री मुनिसुव्रतजी

२१ श्री नेमिनाथजी

२२ श्री रिष्टनेमीजी

२३ श्री पार्श्वनाथजी

२४ महावीरस्वामी (अपरनाम श्रीवर्धमानजी)

२० विहरमानके नाम.

१ श्रीसीमंधरस्वामी.	११ श्रीविशालधरस्वामी
२ श्रीजुगमंधिरस्वामी,	१२ श्रीचंद्राननस्वामी.
३ श्रीबाहुजीस्वामी.	१३ श्रीचंद्रबाहुस्वामी.
४ श्रीसुबाहुजीस्वामी	१४ श्रीभुजंगस्वामी.
५ श्रीसुजातस्वामी	१५ श्रीईश्वरस्वामी.
६ श्रीस्वयंप्रभूस्वामी	१६ श्रीनेमप्रभूस्वामी.
७ श्रीऋषभानंदस्वामी	१७ श्रीवीरसेनस्वामी.
८ श्रीआनंतवीरस्वामी,	१८ श्रीमहाभद्रस्वामी
९ श्रीसूरप्रभूस्वामी.	१९ श्रीदेवयसस्वामी.
१० श्रीवज्रधरस्वामी.	२० श्रीअजीतवीरस्वामी

११ गणधरके नाम.

१ श्रीइंद्रभूतिजी.	४ श्री विगतभूतिजी.
२ श्रीअग्निभूतिजी.	५ श्री सुधर्मास्वामी.
३ श्रीवायूभुतिजी.	६ श्री मंडीपुत्रजी.

७ श्री मोरिपुत्रजी १० श्री मेतारजजी
८ श्री अकपितजी ११ श्री प्रभासजी
९ श्री अचलजी

१६ सतीके नाम

१ श्री ब्राह्मीजी	९ श्री मृगावतीजी
२ श्री सुदरीजी	१० श्री चेलणाजी
३ श्री कौसल्याजी	११ श्री प्रभावतीजी
४ श्री सीताजी	१२ श्री सुभद्राजी
५ श्री राजेमतीजी	१३ श्री दमयंतीजी
६ श्री कुंताजी	१४ श्री सुलसाजी
७ श्री द्रौपदीजी	१५ श्री शिवाजी
८ श्री चन्दणाजी	१६ श्री पद्मावतीजी

यह चौविस तिर्थंकर बीस विहरमान ग्यारे गणधर सा॰ सतीको त्रीकाल वंदणा नमस्का हाजा तिरखुत्ता जाव सस्थागणं वदामी

लघू साधू वंदणा

साधूजीने वंदणा नितनित कीजे, प्रह उगमते सूर रे प्राणी। नीच गतिमे ते नहीं जावे,पावे रिद्धि भरपूर रे प्राणी। साधूजीने वंदणा नितानितकीजे ॥१॥ म्होटा ते पंच महाव्रत पाळे, छकायरा प्रतिपाळरे प्राणी। भ्रमर भिक्षा मुनी सुझति लेवे, दोष बयालीस टाळरे प्राणी। साधुजीने वंदणा ॥२॥ ऋद्धि संपदा मुनि कारमी जाणी, दिधी संसारने पूठरे प्राणी। यां पुरुषारी सेवा करता। आठु कर्म जावे तूटरे प्राणी। साधूजीने वंदणा ॥ ३ ॥ एक एक मुनिवर रसनारा त्यागी। एक एक ज्ञानरा भंडाररे प्राणी। एक एक

मुनीवर वेयावचीया वेरागी, ज्योंरा गुणागे
नाहीं पाररे प्राणी । साधूजीने वंदणा ॥ ४ ॥
गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परिसह
बाइसर प्राणी । बावन ता आनाचारज टाल,
ज्यांने नमावु म्हारो शीशर प्राणी । साधूजीन
वंदणा ॥५॥ जहाज समान ते सत ऋषीश्वर
भरी जीवे घटा आयरे प्राणी । पर उपगारी
मुनी दाम न मागे दव मे मुर्की, पोंहोंचायर
प्राणी । माधूजीने वदणा ॥६॥ प शरणे प्राणी
। माना पाव पाव न लीलविलासरे प्राणी ।
नन्म जरा ने मरन मिटाव, फीर नही आवे
गभावासर प्राणी । माधूजीने वदणा ॥७॥
एह यत्र आ सद्गुरु केरा, जो राखे मन
म यर प्राणी । नकनिगादमें ते नहीं जाव,

इम कहे जिनरायरे प्राणी । साधुजीनेवंदणा. ॥८॥ प्रभाते उठी उत्तम प्राणी, सुणे साधुरो वखाणरे प्राणी । इण पुरुषांरी सेवा करतां, पावे ते अमरवीमाणरे प्राणी । साधुजीने वं-दणा. ।९। सम्मत अठारे ने वर्ष अठावीसे, बुन्दी गांम चोमासरे प्राणि । मुनि आशकरणजी इण परबोल, हुं उत्तम साधुरो दासर प्राणी । सा धुजीनेवदणा॥१०॥

बडी साधू वंदणा.

नमुं अनंत चोवीशी, ऋषभादिक म-हावीर । आर्य क्षेत्रमां, घाली धर्मनी शीर ॥ १ ॥ महाअतुल्य बळि नर, शूर वीर ने धीर । तीर्थप्रवर्तावी, पहोंत्या भवजळ तीर ॥ २ ॥

सीमधर प्रमुख उघन्य तीर्थंकर वीश । छेअ ढाई द्वीपमा जयवना जगदीश ॥ ३ ॥ एक सो न सिचर, उत्कृष्ट पद जगीश। धन्य मोटा प्रभुजी, ज्याने नमावु शीश ॥ ४ ॥ कवळी दोय काढी । उत्कृष्टा नव काढि ॥ मुनि दोसहस्त्र काडि, उत्कृष्टा नव सहस्त्र कोढि ॥ ५ ॥ विचरेविदहम, मोटा तपसी धार । भावे करि वदु, टाळ भवनी फोड ॥६॥ चोवीसी जिनना, सघळाइ गणधार । चौदसने बावन, त प्रणमु सुखकार ॥ ७ ॥ जिनसाशन नायक, धन्य श्री वीर जिणद । गौतमादिक गणधर वर्त्तव्यो अणद ॥ ८ ॥ श्री ऋषभदवना, भरतादिक सापुत । वैराग्य मन आणी, सयम लियो अद्भूत ॥ ९ ॥ केव

ळ उपराज्यु करीकरणी करतून । जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहूंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहोत्या शिवपुर बाट ॥११॥ श्रीजिन अंतरना, हुवा पाट असंख्य । मुनि मोक्ष पहोत्या, टाळि कर्मना वंक ॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर नमि नमुं अणगार । जिन ततक्षिण त्याग्यो, सहश्र रमणि परिवार ॥ १३ ॥ मुनिवर हरकेशी, चित्त मुनिश्वर सार । शुद्ध संयम पाळी, पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥ वळी इखुकार राजा, घर कमळावति नार । भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥ छेउ ऋद्धि छांडीने, लीधो संयम भार । इण अल्पकाळमां, पाम्या मोक्ष दुवार ।१६। वळी स

पाम्या शिवपूर क्षेम ॥२४॥ धन्य विजय घोष मुनि, जयघोष वळि जाण । श्री गर्गाचारज पहोत्या छे निरवाण॥२५॥श्री उत्तराध्ययनमां, जिनवर कियां वखाण । शुद्ध मनथी ध्यावो, मनमां धीरज आण।२६॥वळि खंदक संन्याशी राख्यो गौतम स्नेह । महाविर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप कठण करीने, झोसी आपणि देह । गया अच्युत देवलोके, च्यवि लेशे भवछेह ॥ २८ ॥ वळी ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार । शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ॥२९॥ शुद्ध संयम पाळी, पाम्या केवळ सार । ए चारे मुनिवर, पहोत्यां मोक्ष माझार ॥३०॥ भगवंतनी माता धन्य सति देवानंदा । वळि सती जयंति,छोड

दिया घर फदा ॥३१॥ सति मुगते पहोत्यां वळी विरनी नंदा । महा सती सुदर्शना, घणि सतियोना वृंदा ॥३२॥ वळीकार्तिक शेठे, पहिमाआहि शूरवीर । जीम्या महोरापर, तापस वळती खीर ॥३३ पछे चारित्र लीधो, मैत्री सहश्र आठवीर । मरी हुवा शक्रेंद्र, च्यावि लेशे भव तीर ॥३४॥ वळी राय ऊदाइ, दियोमा णेजने राज । पछे चारित्र लेइने, सार्यां आतम काज ॥३५॥ गंगदत्त मुनि आनंद, तरण तारणरी जहाज । कुगळ मुनि रुडो, दियो घणाने साज ॥३६॥ धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार आराधिक हुइने, गया देवलोक म झार ॥३७॥ च्यवि मुगत जाशे, सिंह मुनि श्वर सार । बीजा पण मुनिवर भगवतिमा

अधिकार ॥३८॥श्रेणिकना बेटा,म्होठा मुनि-
वर मेघ । तजी आठ अंतेउरि, आण्यो मन
संवेग ॥३९॥ वीरपे व्रत लेइने बांधी तपनी तेग,
गया विजय विमाने च्यवि लेशे शिव वेग
॥४०॥ धन्य थावच्चा पुत्र, तजी बत्रीशे नार।
जिन साथे नीकळ्या, पुरुष एकहजार ॥४१॥
शुकदेव संन्यासी, एक सहश्र शिष्यलार ।
पंचसयशुं शेलक, लीधो संयम भार ॥४२॥
सवी सहश्र अढाइ, घणा जीवोने तार । पुंडर
गिरीपर कियो, पादोपगमन संस्थार ॥४३॥
आराधिक हुइने, कीधो खेवो पार । हुवा मो-
टा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥४४॥धन्य
जिनपाळ मुनिवर, दोय धनावा साध । गया
प्रथम देवलोके, मोक्ष जशे आराध ४५ मल्लि-

नाथना मंत्री, महाबळ प्रमुख मुनिराय । छेह
मुगते सिधाया, गणधर पदवी पाय ॥ ४६ ॥
वाळे जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नाम प्रधान,
पाते चरित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान
॥ ४७ ॥ धन्य तेताळी मुनिवर, दियो
ऋकायने अभयदान । पोटिला प्रतिबोध्या,
पाम्या केवळज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पाचे पाण्डव
नजी द्रौपदी नार । स्थिवरनी पास, लीधो,
नयम भार ॥४९॥ श्री नमि वदननो, पहवो
आभिग्रह कीध । मास मासखमण तप, शत्रु
नय जइ सिद्ध ॥५०॥ धर्मघाष तण शिष्य
धमरुचि अणगार । कीडीओनी करुणा आ
णी दया अपार ॥५१॥ कडवा तुंबानो, कीधो
मघला आहार । सर्वार्थसिद्ध पहुंता, च्यवि

लेशे भव पार ॥ ५२ ॥ वळि पुंडरिक राजा-
कुंडरिक डगियो जाण, पोते चारित्र लेइने,
न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसिद्ध,
पहोंचा, च्यावि लेशे निरवाण ।श्री ज्ञातासुत्रमें
जिनवर कर्या वखाण ॥५४॥ गौतमादिक कुं-
वर, सगाअठारे भ्रात।अंधकाविष्नूसुत, धाराणि
जेनी मात ॥५५॥ तजी आठ अंतेउरी, करी
दीक्षानी वात, चारित्र लेइने, कीधो मुक्तिनो
साथ ॥५६ श्री आणिकसेनादिक, छये सहोदर
भ्रात।वसुदेवना नंदन, देवकी जेनी मात ॥५७॥
भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावइ जाण ॥ सुळ-
सा घरे वधिया, सांभळी नेमिनी वाण ॥५८॥
तजी बत्रीस अंतेउरी, नीकळीया छिटकाय ।
नळकुबेर सरिखा । भेट्या नेमिना पाय ॥५९॥

करि छट छट पारणा, मनमें वैराग्यलाय। एक मास सथारे, मुगाति विराज्या जाय ॥६० ॥ वाळे दारुन सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय। ।वळि कुमर अनावृष्टि, गया मुगाति गढ माय ६१। वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गजसुकुमाळ रुप आति सुदर, कळावत वय बाळ ॥ ६२ ॥ श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जजाळ। भिक्षूनी पडिमा, गया मसाण महाकाळ। ॥६३॥ देखी सोमिल कोप्यो, मस्तके बांधी पाळ खेरना खीरा, शिर ठविया असराळ।६४। मुनि नजर न खंडी मेटी मननी झाळ। परीसह सहीने, मुगाति गया ततुकाळ।६५। धन्य जाळि मयळी, उवयालादिक साध। सांब प्रद्युमन, अनिरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ वळिसच्चनेमि

द्रढनेमि, करणी कीधी वाध । दशे मुगते प-
होता, जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य
अर्जुनमाळि, कियो कदाग्रह दूर । वीरपे व्रत
लेइने, सत्यवादि हुवा शूर ॥६८॥ करी छट
छट पारणां, क्षमा करी भरपूर । छ मास माहि,
कर्म कियां चकचूर ॥३९ ॥कुंवर अइमुत्ते, दी-
ठा गौतमस्वाम । सुणि विरनी वाणी, कीधो
उत्तम काम ॥७०॥ चारित्र लेइने, पहोत्या
शिवपूर ठाम । धुर आदिमकाइ, अंत अलक्ष-
मुनि नाम ॥७१॥ वाळि कृष्णरायनी, अग्र म-
हिषी आठ । पुत्र वहु दोये संच्या पुण्यना
ठाठ ॥७२॥ जादवकुळ सातियां, टाळ्यो दुः-
ख उचाट । पहोंता शिवपुरमे, ए छे सूत्रनो
पाठ ॥७३॥ श्रेणिकनी राणी, काळे आदिक

वश जाण । दशे पुत्र वियोगे, सांभळी वीरनी वाण ॥७४॥ चंदनबाळा'प, सयम लेइ हुवा जाण । तप करी देह झोशी, पहोत्या छे निरवाण ।७५। नवादिक तेरे, श्रेणिक नृपनी नार, चंदनबाळापे, लीयो सयम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संथारे, पहोता मुक्ति मझार । ए नेवुं जणानो अंतगढमां अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना बेटा, जालियादिक तेवीश । धारेपे व्रत लइने, पाळ्यो विश्वा वीश ॥७८॥ तप कठण करीने, पूरी मन जगीश । देवलोक पहोंता, मोक्ष मई थशे इश ।७९॥ कांकंदिनो धन्ना, तजी बत्रीशे नार महावीरसमीपे लीधो संयम भार ॥८०॥ करि छट छट पारणा आयंबिल उच्छिष्ट आहार । श्रीवीरे

वखाणया, धन धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥ एक मास संथारे, सर्वार्थसिद्ध पहुंत। महाविदेह क्षेत्रमां, करशे भवनो अंत ॥८२॥ धन्नानि रीते, हुवा नवेइ संत । श्री अनुतरोवाइमां, भाखी गया भगवंत॥८३॥सुबाहु प्रमुख, पांचसो नार । तजी वीपरें लीधां पंच महाव्रत सार ॥८४ ॥ चरित्र लेइने, पाळ्यां निरतिचार । देवलोके पहोंता, सुखविपाके अधिकार ॥८५॥ श्रेणिकना पैत्रा, पोमादिक हूवा दश । वीरपें व्रत लेइने, काढ्यो देहनो कस ॥ ८६॥ संयम अराधी, देवलोकमां जइ वश । महा विदेह क्षेत्रमां, मोक्ष जाशे लेइ जश ॥८७॥ बळभद्रना नंदन, निषाधादिक हुवा बार । तजी पचास अंतेउरि, त्याग दियो संसार ॥८८॥

सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध । सर्वार्थसिद्ध पहोंता, होशे विदेह में सिद्ध ॥८९ ॥ धन्नो ने शालिभद्र, मुनिश्वरोनी जोड । नारीना बंधन, ततक्षण न्हांख्यां त्रोड ॥९०॥ घर कुटुंब कबीले, धन कंचननी कोड । मास–मासखमण तप, टाळशे भवनी खोड ॥९१॥ सुधर्म स्वामीना शिष्य, धन्य २ जंबुस्वाम। तजी आठ अन्त उरि मात पिता धन धाम ॥९२॥ प्रभवादिक तारी पहोंत्या शिवपुर ठाम, सूत्र प्रवर्ताविं, जगमां राख्यु नाम ॥९३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद । शुद्ध अभिग्रह पाळी, टाळि दियो भवफंद ॥९४॥ वळि खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल । परिसह सीहन, भव फेरा दिया टाळ ॥९५॥ वळी

खंधक ऋषिना, हुवा पांचशे शिष्य । घाणीमां पील्या, मुगति गया तजी रीश ॥ ९६ ॥ संभूति विजय शिष्य, भद्रबाहु मुनिराय । चौद पूर्वधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ॥ ९७ ॥ मुनि आर्द्रकुमार ने, थुळिभद्र नंदिषेण । अरणिक अइमुतो, मुनीश्वरोनी शेण ॥ ९८ ॥ चोवीशीना मुनिवर, संख्या अठावीस लाख । ने सहश्र अडताळीस, सूत्र परंपरा भाख ॥ ९९ ॥ कोइ उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख । उघाडे मुख बोल्या, पाप लागे विपाक ॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मळ ध्यान । गज होदे पाम्या, निर्मळ केवळज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदिश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुंदरी दोय । चारित्र लेइने, मुगति गयां सिद्ध

हाय ॥ १०२ ॥ चावीशे जिननी, बडी शिष्य णी ॥ चावीशा सती मुगते पहोत्यां, पूरी मन जगीश ॥ १ ३॥ चोवीशे जिनना, सर्व साधवी सार । अडताळीस लाख ने, आठसे सित्तर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्म शु प्रीत । राजी मति विजया, मृगावती सुविनीत ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयन्ती सीत । इत्यादिक सतीयो, गइ जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥ चावीशे जीनना, साधु साधवी सार । गयां मोक्ष देवलोके, हुवे रावा धार ॥ १०७ इण अढी द्वीपमां, गरमा नपमी धाळ । शुद्ध पच महा व्रत धारी, नमो नमो त्रीकाळ ॥ १०८ ॥ ए जतियों स मियाना, लीजे नित्यप्रते नाम । शुद्ध मन

ध्यावो, यह तरवानुं ठाम ॥१०९॥ ए जती सतीशूं, राखो उज्वल भाव, एम कहे ऋषि जयमल, एह तरवानो दाव ॥११०॥ संवत अढार ने, वर्ष सातो मन धार । शेहेर जालोर मांही, एह कह्यो अधिकार ॥१११॥

चार सरणा.

॥ अरिहंत सरण पव्वज्जामी । सिद्धसरण पव्वज्जामी ॥ साहु सरण पव्वज्जामी ॥ केवली पन्नतधम्म सरण पव्वज्जामी ॥

पहला सरण श्री अरिहंत भगवंतका. अरिहंत प्रभु चौतीस अतीसय, पेंतीस वाणी गुण, अष्ट प्रातिहार, अनंत चतुष्टय, बारे गुण कर के विराजमान, अठारे दोष करके रहित,

चोंपठ इन्द्र के वदनीक पूजनीक, इत्यादिक अ
ननगुणे करी विराजमान है। ऐसे अरिहंत प्रभू
का इसभव परभव भवोभव सरणा होणा !

दूसरा सरणा श्री सिद्ध भगवतका सिद्ध
भगवन अष्टगुण इगतीस आतिसय करी स
हित, मोक्षरुप सुखस्थानमें वीराजमान, अ
नत अक्षय, अव्याबाध, अजर, अमर, अवि
कारी, अनन सुखमें वीराजमान, अष्ट कर्म
रहित है ऐसे सिद्ध भगवंतका, इसभव
परभव, भवोभव सरणा होणा !

तीसरा सरण साधू मुनिराजका साधुजी
सत्ता इस गुण करी सहित, कनक कामिनी
के त्यागी, सतरे भेद सजम के पालणहार,
बार भेद तपके करणहार, छत्र वोष टाली अ

हार वस्त्र स्थानक पात्र के भोगवणहार, नि-
र्लोभी, बावीस परिसह सम प्रमाण सेहे, शांत
दांत–क्षांत, इत्यादि अनेक गुण सहित, ऐसे
निग्रंथ साधूजी महाराजका इस भव पर भव
भवोभव सदा सरण होणा !

चोथा सरण केवली परूपित दया धर्मका
धर्म दो प्रकारके श्रुत धर्म सो द्वादशांगी
जिनागम । चारित्र धर्म सो आगारी अणगा
री. यह धर्म आधि व्याधी उपाधिका विनाश
णहार है. मोक्षरूप शाश्वत सुखका दाता है.
ऐसे दया धर्मका इसभव परभव भवोभव स-
दा सरणा होणा !

यह चार सरण, दुःख हरण, और न दुसरा
कोय। जो भवी प्राणी आदरे, तो अक्षय अ-

मर पद होय ॥

तीन मनोरथ

आरंभ परिग्रह तजी करी। पंच महा व्रतधार॥
अंत अवसर आलोयण । करूं सन्थारोसार ॥

पहिला मनोरथ – समणो पासक (साधू की सेवा करने वाल) श्रावक जी ऐसा चिंतव की, कब में चौदे प्रकारका बाह्य और नव प्रकारका अभ्यंतर परिग्रह से तथा आरंभ स निवर्तुंगा ? यह आरंभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कषायका बढाने वाला दुर्गतिकादाता, मोहमत्सर रागद्वेषकामूल धर्म ज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य संतोष सम कित संयम तप ब्रम्हचर्य सुमतिका नाश कर

नेवाला, अठारे पापका बढानेवाला; अनंत संसारमें भवानेवाला. अध्रुव, अनित्य, अशाश्वता, असरण, अतरण, निंग्रथोंका निंदनीक, ऐसे अपावित्र आरंभ परिग्रहका मै जब त्याग करूंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ?

दुसरा मनोरथः—समणोपासक श्रावक जी ऐसा चिंतवे—विचारे की, कब में द्रव्ये भावे मुंड होकर दश याति धर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पांच महावृत, पांच सुमति, तीन गुप्ति, सतरे भेदे संयम, बारे प्रकारे तप छकायका दयाल, अप्राति बंध विहार, सर्व संग रहित वीतरागकी आज्ञा मुजब चलनेवाला होउंगा? जिसदिन निग्रंथका मार्ग अंगिकार

करूगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा।

तीसरा मनोरथ – समणोपासक श्रावक ऐसा चिंतवे की, किस वक्त में सर्व पापस्थानक आलोय निंदी नि शल्य हो सर्व जीवोंसे खमत खामण कर त्रिविध २ अठारे पापकों त्याग जिस शरीरका मैंने अतिप्रेमसे पाला है ऐसे शरीरसे ममत्व त्याग छल्ले श्वासोश्वास तक वो सीराके चार अहारको त्यागक तीन आराधना चार शरणा सहित आयुष्य पूरा करूगा, पंडित मरण मरूगासो दिन मेरा परम कल्याणका होगा।

यह तीन मनोरथका विचार करता हुया पाणी महा निर्जरा उपराज, ससार प्रत करे सो शिघ्र मुक्त होवे। अनुक्रम सर्व दु:खसे [illegible] अनत अक्षय सु[illegible]

तीन मनोरथ ए कहे। जोध्यावे नित्य मन।
साक्तिसार वरतेसहु। तोपावे शिवसुख धन॥

चौदह नियम.

१ सचित—सजीव वस्तु.
२ द्रव्य—स्वाद तथा नाम पलटे जित्ने.
३ वियग—दूध, दहि, घी, तेल मीठास.
४ पन्नी—पगरखी, मौजा, खडावे वगैरे.
५ तंबोल—मुखवास, सुपारि प्रमुख.
६ वस्त्र—पहरने ओडनेके कपडे
७ कुसुम—सुंगणेकी वस्तू, फूल प्रमुख.
८ वाहन--घोडा, गाडी, जाहाज प्रमुख.
९ सयन--पाट, पलंग, बीछाने.
१० विलेपन—तेल, पीठी शरीरके लगाने

की वस्तू

११ बंभ-ब्रम्हचर्य, कुशीलकी मर्यादा
१२ दिशा ऊंची नीची श्रीछी दिशा
१३ नाहण स्नान करने की, वस्त्र धोनेकी
१४ भतेषु आहार पाणीका वजन
१५ पृथ्वीकाय-मट्टी, लूण इत्यादिक.
१६ अपकाय-पाणी, नीवाण, परंडे प्रमुख
१७ तेउकाय अग्नी, दीवा, चूला चिलम
१८ वाउकाय-हवा पंखा, झूला
१९ वनस्पति काय लिलोत्री, शाख, फल.
२० त्रसकाय-हलते चलते जीव,
२१ असी हथीयार, सूइ, तरवार
२२ कम्मी-खतीवाडी
२३ मस्सी-व्यापार, लिखणका

यह तेवीस बातोंकी नित्य मर्यादा करने से सर्व लोककी अवृत आणी बहूत बंध हो जाती है. जीवको थोडे ही कालेंम मोक्ष के परम सुखकी प्राप्ती होती है.

॥ केवळानन्द छन्दावली ॥

मङ्गलाचरणम्

॥ मनोहर छन्द ॥

श्री अरिहन्त बार गुणवन्त ॥ सिद्ध गुण आठ प्रभु बिराजे मुगत है ॥ आचार्य छत्तीश गुण ॥ पच्ची उपाध्याय थुण ॥ साधु गुण

शताइश ॥ देत है सूगत है॥ सर्व एकशाय अठ। गुण माल हीये रट । सुद बुद्ध शक्तीदेय। हरत कुमत है ॥ मन वचकाय थित । बंदत में नितातित । कहेत हे केवलरिख । दीजो सूजुगत है ॥ १ ॥ चोवीसी जिनराज । थांगे गणधर चवदेस बावन । साधू लक्ष अठावीस छांष्ट सहश्र जाणी है। साधवी छीयाली लाख, नेउहजार चारसो छे । श्रावक पच्चावन लाख साडीपन्नेर सहश्र बखाणी है। श्राविका किरोड एक, पांचलाख दश सहश्र । चउ तीर्थतणो सहु लेखो इम आणी है ॥ कहेत केवल रिख, वंदु नित एक चित । इन्न के प्रसाद कंथू वाणी सुख दाणी है ॥ २ ॥

॥ श्री आदोनाथ [ऋषभदेव]॥
॥ जी का स्तवन ॥

प्रथम नमू अरिहंतने जी । कांइ गुरूवा गौतमस्वाम ॥ आपतणा गुण गावस्यूंजी । कांइ श्री आदेश्वरस्वाम ॥ आदइ आव जि नेश्वरोजी ॥ प आकडी ॥ १ ॥ मा-मरुदेवीना लाइलाजी ॥ काइ नाभीराय कुळचंद ॥ जु गल्या धर्म नीवारनेजी । काइ । धरताया आ नंद ॥आद ॥ २ ॥ मा-मरुदवी मुगते गयाजी । काइ नाभीराय हुवा ्व ॥ से पण मुगत सिधावीयाजी । काइ हा टवी कर्मरी खव ॥ आद ॥ ३ ॥ शिवा मगलानेशिवा नदाजी। काइ यह थार दा नार ॥ मत्वारना मुख भो गवीजी । पछ लीनो सजम भार ॥ आद

॥ ४ ॥ ब्राह्मीजीने भरतश्वरुजी । कांइ शिवा मंगलाजीरा पुत ॥ वली अठाणू पुत्तर हुवा जी ॥ कांइ एकुण घरनो सूत ॥ आद ॥५॥ बाहुबलजीने सुंदरीजी । कांइ शिवानंदाजीरा जाण ॥ सघलाइ संजम आदरीजी । कांइ पाम्या पद निरवाण ॥ ६ ॥ बीसलाख पूर्व कूंवर रह्याजी । कांइ त्रेसठ लाखनो राज ॥ एक लाख दिक्षा पालनेजी । पूर्व चोरासीलाखनो साज ॥ आद. ॥ ७ ॥ सहश्र वर्ष छ-द्मस्त रह्याजी । पछे उपनो केवलज्ञान ॥ भ-वी जीवाने तारनेजी । प्रभु पाम्या पद नि-रवान ॥ आद ॥ ८ ॥ अवघेणा धनुष्य पांच सेजी । कांइ सोवन वरण शरीर ॥ व्रषभ लंछन कर सोभताजी । प्रभु पाम्या भवजल

तीर ॥ आद ॥ ९ ॥ अष्टापद मुगते गयाजी ॥ प्रभु दश सहस्र मुनी सगात ॥ छे दिन आणसण आवीयाजी । जम्बूदीप पन्नतीमें वा त ॥ आद ॥ १० ॥ सम्मत उन्नी सो सो भताजी । काइ चौपन्न करी साल ॥ शहर करोळी शाभनाजी । काइ राजकरे भमर पाल ॥ आद ॥ ११ ॥ पोश सुदी एकम भ लीजी । काइ वार छ शुकर सार ॥ केवल ऋ-पिनी वीनताजी । प्रभू भवोदधीपार उतार ॥आद ॥ १२ ॥ इति ॥

॥श्री महावीरस्वामीजीका स्तवन॥

कर जाे व वदाथ ज। ॥ काइ चावीसमा जि नराज ॥ रे नमस्कार हयावा ॥ प्रभुतरण

तारणरी जहाझ ॥ १ ॥ महावीर जिनेश्वर वंदीयेजी । आंकडी ॥ श्री पारश्व प्रभू मुगते गयाजी । पछे वर्षं अडाई सो जाण ॥ काल व्यतीत थया थकांजी । हुवा चोवीसमा वर्ध-मान ॥ महा ॥ २ ॥ त्रसला देवीजी जन्मी-याजी । कांइ श्री सिद्धारथ तात । बहुतर व-र्षनो आउखोजी । कांइ अवघेणा कर सात॥ महा ॥ ३ ॥ तीन ज्ञान निरमळ लेइजी । उ-पना गर्भामझार ॥ सोवन वरण सुहावणोजी । कांइ सिंह लछण सिरदार ॥ महा ॥ ४ ॥ चेत सुदी तेरस जन्मिया ॥ कांइ आइ छपन कुमार ॥ मंगल गाया मिल करीजी ॥ जठे वरत्या जयजयकार ॥ महा ॥ ५ ॥ चौसट इं-दर मिली करीजी । कांइ मेरुगीरी ले जाय ॥

रत्न सिंहासन बेठायनेजी । कांइ कलशे जल न्हावराय ॥ महा ॥६ ॥माता पासे मुकिनेजी। इंद्र गया स्वर्ग मझार ॥ कुंवरपणे सुख विल-सनेजी । पछे परण्या जसोदा नार ॥ महा ॥ पुत्री एक थांरे हुइजी । कांइ प्रियदंशणाजी नाम ॥ जम्मालीजीने परणाश्रीयाजी, कांइ जोग देग्वीने ठाम ॥ म ॥ ८॥ पीछे सजम आदर्योजी । कांइ एकल्हाभगवान । बारे वर्ष छद्मस्थ रह्याजी । पछ उपनो केवळ ज्ञान ॥ महा ॥ ९॥ प्रियदंशणाजी सजम लीयाजी । काइ जम्मालिजी भी लार ॥आ-ज्ञा उलधी आपरीजी । लीयो किल्मुखार्मे अवतार ॥ महा १०॥ तीस वष घरम रह्याजी । कांइ संयम वर्ष बयाल ॥ वष बहुतरको

आउषोऊी ।भोगी मोक्ष गया दयाल ॥ महा. ॥ ११ ॥कार्तीक वद अमावास्याजी । कांइ पावापुरीमें जाण । रजनी मध्यने अवसरेजी । हुवा चर्म प्रभू निरवाण ॥ महा.॥ १२ ॥ पंचमा आरामें वर्ते छजी । कांइ सासण थांरो सार ॥ चार तीर्थंर हृदयमेंजी । कांइ वरते जयजयकार ॥ महा. ॥ १३ ॥ संवत उन्नं सो सोभताजी । कांइ चौपन केरीसाल ॥ शहेर करोली सुहामणोजी । कांइ राज करे। भमरपाल ॥ महा ॥ १४ ॥ पोस सुदी पांचमभलीजी । कांइ वार छे मंगल सार, केवल रिख अरजी करेजी । प्रभू भव दुःख दुर नीवार ॥ महा. ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

श्री पार्श्वप्रभूजी । थारा दरशणरी म्हाने चायना ॥ आ ॥ आश्वसेण कुल कीर्तिधारी । भामाराणी सुत जाया ॥ पोस वदी दिन द शम जाणा ॥ काशी देशमें आयाजी ॥ श्री ॥ १ ॥ बणारसी नगरीमें जन्म लीयो तब छप्पन कुमारी आइ ॥ गावे बाजे ताल लगावे । नृत्य करे उमाइजी ॥ श्री ॥ २ ॥ चौंसठ इद्र मिल महोच्छव करने । मेरू शिखर न्हवराय ॥ पार्श्वनाम स्थापन करीने । मातार्जी पासे लायेजी ॥ श्री ॥ ॥ ३ ॥ बालपणामें रमता रमता । माताजीके लार ॥ गंगा तटपर आये चल्कर । तापसके दरयाराजी ॥ श्री ॥ ४ ॥ नाग नागणी जल

ता देखकर । तापसको बोलाया ॥ क्या अकारज करता जोगी । जरा दया नही लाया-जी ॥ श्री ॥ ५ ॥ नवकार मंत्रका पद संभलाकर । स्वर्ग गती पहोंचाया ॥ धरणिंदर पद्मावती प्रगटे । प्रभूजीका गुण गायाजी ॥ श्री ॥ ६ ॥ जोबन वयमें परण्या प्रभूजी । श्री परभावती नार ॥ राजपाटको छोड लिया फिर । संयमपदको धारजी ॥ श्री ॥७॥ कुमठ मरकर हुवा मेघमाली । प्रभुजी हुवा अणगार ॥ पिछला भवका वैर लेवणको ॥ तुर्त हुवा तैयारजी ॥ श्री ॥ ८ ॥ जलदी जलदी आकर उसने । मूशल जल वरषाया ॥ नाक बरोबर आया पाणी । प्रभुजी नही घबरायाजी ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन कम्पा ।

इन्द्र इंदाणी आया ॥ पद्मावतीजीने लीय सिर उपर । इंद्र करत रहे छायाछी ॥ श्री ॥ १०॥ तुर्त आया अपराध क्षमाकर । चरण सीश न माया ॥ हार कुमठ और हाथ जोडकर । देवलोक सिधाराजी ॥ श्री ॥ ११ ॥ कर्म काटकर केवली होकर । पाया पद निरवाण ॥ शहेर मुम्बाइमें गुण गाया । केवलरिख हित आणजी ॥ श्री ॥ चिंचपुगली मुम्बावे । हनुमानगलीमें आया ॥ मगलद की वाडी माय । चौमाने सुख पायाजी ॥ श्री ॥ १३ ॥ सवत उन्नीस इगसट कार्तिक । वद तेरस शनिवार ॥ चार ठाणासे कीदा चौमासा । अमालख रिखकी लारजी ॥ श्री १४ ॥ पूज्य साहेब महानन्दी ऋषीजीकी, मम्प्रदाय वेछाण॥

चारुं मांहेसु मोतिरिखजी । कर गया कल्याणजी ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ चौवीसी जिन स्तवन ॥

श्री जिनराज भजोरे भाइ । समस्त संकट दूर टलत है । शिवपुरका सुख दाई ॥ श्री जिन. ॥ आंकडी ॥ ऋषभ आजित संभव अभीनंदन । ध्यावत आणंद थाइ ॥ सुमत पद्म सुपार्श्व चंदा प्रभू । भजतभर्म मिट जाइ ॥ श्री. ॥१॥ सुबुद्ध शीतल श्रेयांस वासपूज्य। वसीया हियडा मांई ॥ वीमल अनंत धर्मनाथ शांती जिन । शांती जग वरताइ ॥ श्री ॥ २ ॥ कुंथू अरह मल्ली मुनिसुव्रतजी । शिवपुर जाइ वस्याइ ॥ नमी नेमी पार्श्व महावीरजी

। शासण गया दिपाइ ॥ श्री ॥ ३ ॥ अनत चौवीसी मुगत पहोंची। आठू ही कर्म खपाई॥ शहर आगरे लोहामंडीमें । केवलऋषि गाइ ॥ श्री ॥ ४ ॥ संवत उन्नीसो पचावन । धुजा आसोज माइ॥ इग्यारस दिन अर्ज करत है ॥ जनम मरण दो मीटाइ ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुजी का स्तवन ॥

॥ वारी जाऊं में गुरुकी । जिन समकित रत्न पायाजी ॥ जा ॥ विषम पथसे शुभ पथ लाय । कृणदा शक्र गीनायो जी ॥ वारी ॥ ॥१॥ म निरगुण धा दाम लाहेगा । सुवर्ण गट करया नी ॥ वारि ॥२॥ राजेश्वर ओर अमी चखवायाजी ॥ वा

री ॥ ३ ॥ समकित दीपक घट मांहे जोयो । मिथ्या तिमीर मीटायोजी ॥ वारी ॥ ४ ॥ भेद विज्ञान ज्ञान वाह्य अंतर । जीवादिक द-रसायोजी ॥ वारी ॥ ५ ॥ आत्म अनुभवको सर दीनो । अटल राज पथ पायोजी ॥ वा-री ॥ ६ ॥ उगणीसे छप्पन शुद्ध पूनम । मृ-गसर लाहोर आयोजी ॥ वारी ॥ ७ ॥ के-वल रिख गुरुचरणको किंकर । वारंवार गुण गायोजी ॥ वारी ॥ ८ ॥

॥ जिनवाणी स्तवन ॥

॥ श्री जिनवाणी सुणो भवी प्राणी । वा-णी अमृत नीर समाणी ॥ धन जिनवाणी ॥ ॥ आ ॥ जोजन गामिनी प्रभुजीनी वाणी ।

चोतीस अतीशय पेंतीस गुणवाणी ॥ जे नर सुणत महा सुखदाणी । स्वर्ग मोक्षका सुख की नीशानी ॥ श्री जिन ॥ १ ॥ भव्यजन सुनकर तृपत होवे । मुरख माडे खेंचाताणी ॥ भाग्य विना कहो किण विध लहीये । समकित जोत हीये प्रगटाणी ॥ श्री जिन ॥२॥ मिथ्या तिमिरको विनाश करत है । ज्ञान उद्योत प्रकाश धराणी ॥ सुरनर इन्द्र चक्रवर्त सुणता । राजा मंडलीक सेठ सेठाणी ॥ श्री जिन ॥ ३ ॥ सर्ववृत और देशवृत ले । केई पाम्या छे स्वर्ग निरवाणी । नर्क निगोदका दु ख दीया मेटी । जन्म जरा और मरण मीटाणी ॥ श्री जिन ॥ ४ ॥ सूणो जिणवाणी प्रेम हीये आणी । पाखंड मतको मान गला

णी ॥ राग द्वेषको काम नहीं है । समतारस सूण चित लेवो ठाणी ॥ श्री जिन. ॥ ५ ॥ उन्नीसे छप्पनकी साले श्यालकोट पंजाबेंम जाणी ॥ केहत केवलरिख अवसर आयो । चूकत मनमांये पस्ताणी ॥ श्री जिन ॥ ६ ॥ चेत सुदी ग्यारस के दिवसे। गुरू मुख वचन अती सूखदाणी ॥ विनय सहित जे चितमें धरसी । शांती देवे ताप हटाणी ॥ श्री जिन ॥ ७ ॥

॥ अथ पांच कल्याणकी सज्झाय ॥

जयजय जिन त्रिभुवन धणी। करूणानिधी कृपाल ॥ आ ॥ त्रिकालका जिनरायना। वरणु पंच कल्याण ॥ ते सुनजो चितलायने ॥

धरी निश्चल ध्यान ॥ जय ॥ १ ॥ स्वर्ग नर्क
थकी आवीया । माता उदर मझार ॥ जन
नी मनोरथ पूरीया । दीठा स्वपना दश चार
॥ जय ॥ २ ॥ हर्ष धरी जाग्या पदमणी ।
जइ वीनव्यो भूपाल ॥ स्वप्नपाठक को तेडके
निर्णय कीयो महीपाल ॥ जय ॥ ३ ॥ तीन
ज्ञान छे निर्मळा । प्रभूने गर्भके मांय ॥ प्रथम
कल्याणक चवन ए । थयो श्री जिनराय ॥
जय ॥ ४ ॥ बीजो कल्यानक जनमको । शूभ
विरीया मझार । सुख समाधीना जोगथी ।
लीयो जिननो अवतार ॥ जय ॥ ५ ॥ ॥ छप्प
न कुमारी आइने । गाया गीत मनोहर ॥ ज
ननी प्रभुने न्हवरावीया । केली घरने मझार
॥ जय ॥ ६ ॥ चोसट सूरपती आवीया । मे

रू शिखेर ले जाय ॥ जन्म मोहछत्र कीयो हर्षथी । खीरोदक न्हवराय ॥ जय ॥ ७ ॥ पीछा मेली माता कने ॥ देव गया निज ठाम । कुवर पणे सूखे आतिक्रम्या । जोवन वय हुइ जाम ॥ जय ॥ ८ ॥ केइ परणी छि टकाय दी । पूत्रादिक परिवार ॥ केइ प्रभू कुंवारा पणे । लीनो संयम भार ॥ जय ॥ ९ दिक्षा अवसर आवीया । सूरपती सहू साथ॥ औछब तीजा कल्याण को । कीयो सुरनरना थ ॥ जय ॥ १० ॥ चोथो ज्ञान पेदा हुयो ॥ छद्मस्त जिनराय ॥ उपसर्ग खमी तपस्या क- री । चार कर्म खपाय ॥ जय ॥ ११ ॥ आ- यो गुणस्थान तेरमो ॥ पाया केवल ज्ञान ॥ सुरिंद्र आइ मोछव कीयो । यथो चोथो क-

नो जी ॥ प्रभू सार करो अव मेरी ॥ ये वि-
नंती मानोजी ॥ जग ॥ १ ॥ में अनंत काल
दुःख पायो ॥ नही मारग आयोजी ॥ भव अ
टवीमांये भमतो ॥ अव सरणो सहायोजी ॥
जग. ॥ २ ॥ में जाण्यो निश्चय तुजने ॥ मेरे
रखवालोजी ॥अव वांह पकडके तारो ॥ दो
भव दुःख टालोजी ॥ जग.॥३॥एक किंचितद्रष्टी
तेरी ॥ शुभ मुजपर होवेजी ॥ सब दुःख द-
रिद्र महारा ॥ एक छिन्नमें खोवेजी ॥ जग.
॥ ४ ॥ तुमजीव अनंता तार्या ॥ भव दुःख
थी उवार्याजी ॥ अव वृध विचारी श्वामी ॥
करो म्हारा धार्याजी ॥ जग ॥ ५ ॥ कहे के-
वल रिख कर जोडी ॥ करो केवलनाणीजी-
॥ उन्नीसे सतावन जेठ वद । सातमकही वा-

णाजी ॥ जग ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उववाइ सूत्र भावर्थ सझाय ॥

चंपानगर निरुपम सुंदर । बाग बगीचा वारू ॥ गढ मठ मंदिर हाट हवेली । सोभा विविध प्रकारु हो ॥ १ ॥ भव्यजन । श्री जिन वंदन जावे ॥ आं ॥ राजा कोणिक श्रेणिक पुतर न्याय नीती गुण धारो ॥ राणी सुभद्रा आदी परवारे। शोभे इद्र सम सारे हो ॥ भव्य श्री ॥ २ ॥ राजाजीरे एहवी प्रतिज्ञा । श्री जिन जिहां धीराजे ॥ तेह वधामणी आंया पीछे । अन्य काम करणो छाजे हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ ३ ॥ इण कारण एक उतम सेवक । एहवो प्रमाण ठेराये ॥ नित प्रते आइ ते राजने ।

वीतक बात सुणावे हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥४॥
एक दिन श्री जिनराज पधारे । एहवो भाव
वतायो ॥ सुण राजाजी अति हरषाया । न-
गर भणी सजायो हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥५॥
चौदे हजार मुनीवर लारे । आरज्या छतीस
हजारो । पूर्ण भद्र वगीचा में उतर्या । हर्ष्यो
माली अपारो हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ योग द्रव्य
लेइने चाल्यो । राजाजी पासे आवे ॥ जिन
पुरूषांरा दर्शन चाहो । ते मुज बाग शोभावे
हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ ७ ॥ सांभल राजा दी-
नी बधाइ । साढी बारा लाख धनो ॥ कर
आढंबर वंदण चाल्या । साथे लेइ सज्जनो ॥
भव्य ॥ श्री ॥ ८ ॥ चमर छतर देखी जिन

राजना * पाच अभीगम कीना ॥ नमस्कार कर सन्मुख बेठा । वाणी अमृत रस पीना ॥ हो भव्य ॥ श्री ॥ ९ ॥ अमोघ धारा देशना फरमाइ ॥ जिवादिक दरसाइ ॥ सुणी सभा सहु अती आणंदी । पुण्य जोग मीली जोग वाइ हो ॥ भव्य ॥ श्री १० ॥ केइक समकित मूल केइ धार्या । कइ सजम आदरीया ॥ कर करणी स्वग मोक्ष पधार्या । आत्म कारज स रीया हो ॥ भव्य ॥ श्री ११ ॥ गोतमस्वामी प्रश्न पुछ्या । सुत्र उववाइ विस्तारो ॥ अ

---

* पांच अभिगम —सचित वस्तु दूर रख्खी अचित अजाग व तु दूर रख्खी, उत्तरासण कीया (मुख आगे वस्त्र लगाया) भगवतको देखते हाथ जोड़े और मनमें अत्यंत धर्म प्रेम उभराया

मंड आदी शिष्य सातसो केरो । करणीरो अधिकारी ॥ हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥१२॥ समकित निरमल ज्ञान वृत बल । सुणकर चितमांहे धारो ॥ निरवद्य करणी पार उतरणी । येही जैन मत सारो हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ १३ ॥ संवत उन्नीसे अठावन। पोसवदी दिन दशमें ॥ शेहर भोपालमें कहे केवल रिख। आतम राखजो वंशमें हो ॥ भव्य ॥ श्री ॥ १४ ॥ इती

॥ कुंडरीक पुंडरीक की सझाय ॥

जंबुद्वीप सुहामणोरे । लाखजोयण विस्तार ॥ मेरू थकी पूर्व दिशा । महाविदेह क्षेत्र श्रकारजी ॥ १ ॥ करणी फल देखो ॥ आंकणी ॥ सीता नदी दीपतीरे । सब नदीया

में सिरदार ॥ तेह थकीउत्तर दिशा । पुष्क-
लावती वीजय महारजी ॥ क ॥२॥ नीळ-
वत पर्वत थकी भाइ । दक्षिण दिशमें जाण
॥ सीता वनथी पश्चिमे । श्री जिनजी कीया
वखाणजी ॥ क. ॥३ पूडरीक राज्यधानीतिहां
रे । वारे जोयण विस्तार ॥ नव योजण पहोली
कहीजी । ज्ञाताजीमें अधिकारजी ॥ क.॥४॥
पद्मनाभ राजा भलारे ॥ पद्मावती
नाम नार ॥ रुपकला गुण अगली । शीलवती
न सुखकारजी ॥ क ॥ ५ ॥तस नदन दो
दीपतार । कुन्डिक पुंडरीक जाण ॥ राज ल
क्षण सहु गुणनीला । भाइ कुंडरीक कुँवर
सुजाणजी ॥ क ॥ ६ ॥ एक दिन थेवर पधा
रीयाजी । राजा वदण जाय ॥ वाणी सुण

वैरागीया । संजम लेवाने उमायजी ॥ क. ॥ ॥ ७ ॥ वडा कुँवरने राज देरे । लीनो सयम भार ॥ कर करणी मुगते गया । हुवा निरंजन निराकारजी ॥ क. ॥ ८ ॥ पुनरपी थेवर पधारी याजी । वांद्या दोकुँवार । कुंडरीकजी श्रावक थया निग्रंथ बचन जाणनहारजी ॥ क. ॥ ९ ॥ पूंडरी कजी संजम लेइजी । बीचर्यागुरूकीलार ॥ निर्मळ संयम पालता । रोग उपनो शरीर मझार जी ॥ क. ॥ १० ॥ पूंरिक नगरी. आवीयाजी । कुंडरीक वैद्य बुलाय ॥ औषधले निरोगी हुया । फिर बीचर्या जनपद मांयजी ॥ क ॥ ११ ॥ भोग देखी भाइ तणाजी । आर्त व्यापी मन मांय ॥ संजमसे मन डिग गयो । पाछा पुंडरिक पुर आयजी ॥ क.

॥ १२ ॥ मेहेल पीछे अशोक वाडीमेजी ॥ चुपके बेठा आय ॥ माळी देखी अचमे भयो । काइ वीनव्यो रायने जायकी ॥ क. ॥ १३ ॥ भाइ आपका आवीयाजी । बेठा वाडीमांय ॥ राजजी वदण आवीया । आडंबर करी सवाय जी ॥ क. ॥ १४ ॥ वांद्या हर्ष हुलासमुजी । सन्मुख बेठा आय ॥ सुख साता पूछी घणी । कहे धन २ तुम मुनीरायजी ॥ क ॥ १५ ॥ राज छोड संजम लीयोजी ॥ नरभव सफलो कीध ॥ धिक २ होवो मुज भणी ॥ में फस्यो मोहमें इणविधजी ॥ क. ॥ १६ ॥ बोलाया बोले नहींजी । नीची निजर रखा तेह ॥ आरतवता दखने, राजा बोलेभर नेहजी ॥ क ॥ १६ ॥ चिंता छे किसी बातकीजी ।

देवो मुज फरमाय ॥ बोल्या नही जद जा-
णीयो । यांरो मन राजमे लोभायजी ॥ क. ॥
॥ १८ ॥ आप मुनीभेष पेहरीयोजी ॥तिणने
दियो राज भेष ॥ गुरुने वंदणचालीया जी ।
उमंग धरी विशेषजी ॥ क. ॥ १९॥ आयो ते-
लातणो पारणोजी । गुरूने वंदी लाय ॥ अरस
निरस मिलीयो जिसो। दीयो भाडो कायाने तां
यजी ॥ क ॥ २० ॥ वेदना व्यापी आकरीजी ।
समाधीयेकीयो काल ॥ तेंतीस सागररे आऊखे
उपना स्वार्थासिद्ध मझारजी ॥ क. ॥ २१ ॥
तिहांथी चवी सीझसेजी । महाविदेह मझार
॥ हिवे पुंडरीक भोग लोभीयो । वल व धा-
वा कीयो मांस आहारजी ॥ क. ॥ २२ ॥
मदिरा पी मदेम छक्याजी । लुब्धा विषय

भोग मांय । वेदना व्यापी अती घणी । ती जे दिन आयू पूरोथायजी ॥क ॥ १३ ॥महा पापे करी उपनाजी । सातमी नर्कमे जाय ॥ तेंतीस सागरना दु खलीया । माइ सूत भ गने पसायजी ॥ क ॥ २४ ॥ सवत उन्नीसे पच्चावने । आगरे लोहामडी चोमास ॥ केवल रिख करणी तणा । फल प्रत्यक्ष कीना प्रकाश जी ॥ २५ ॥इति

॥पन्नरे तीथीकी सज्झाय॥

हांरे लाला एकम आयो एकलो । तू तो पर भव एकलो जायरे लाला ॥ धर्म विना यो जीवडो । कांइ भव २ गोता खायरे लाला ॥१॥ श्री जिन धर्म समाचरो ॥ आंकणी ॥ हांरे

लाला, पुन्य पाप जगमें कया । इन दोनाको रूप पेछणरे लाला ॥ पुन्यसे शिव सुख पामीये । कांइ पाप छे दुःखरी खाणरे लाला ॥ श्री ॥ २ ॥ हांरे लाला, तीन मनोर्थ चिंतवो । कांइ तीन शल्य दुःखदायरे लाला ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रसुं । जीव तिरी गया मोक्ष मांयरे लाला ॥ श्री. ॥ ३ ॥ हांरे लाला, चार चोकडी, परहरो । चारूं सरणा राखो घट मांयरे लाला ॥ चार ध्यान जिनवर कह्या । कांइ चार वीकथा दुःखदायरे लाला ॥ श्री ॥ ४ ॥ हांरे लाला, पांचू इंद्री वश करो । लेवो पंच महा बृत धाररे लाला ॥ पांचमी गत पावे प्राणीया । कोइ पांच ज्ञान श्रेयकाररे लाला ॥ श्री ॥ ५ ॥ हां ॥ आत्म

सम छे ह काय छे । तेहनी जत्ना करो हित
लायरे लाला ॥ षट पदार्थ ओलखो।छेह ले
स्यामें तीन लो ध्यायरे लाला ॥ श्री ॥ ६॥
हा ॥ सात हाथ तन श्री वीरनो । सात नय
कही जिनरायरे लाला ॥ भय विश्न सात प
रहरो । सात नर्क अछे दु खदायरे लाला ॥
श्री ॥ ७ हा ॥ आठ मद उत्तम तजे । प्र
वचन आठ आराधरे लाला ॥ आठ कर्म अ
लगा करा । तो पामो अक्षय समाधरे लाला
॥ श्री ॥ ८ ॥ हा ॥ नव वाड हे सीलकी ।
नवनीधी चकरीन होयरे लाला ॥ नव लो
कांतिक दवना । नव मीवग छे मोयरे लाला
॥ श्री ॥ ९ ॥ हा ॥दश यती धर्म धारजो ।दश
चाट चित समाधर लाला ॥ दश गुण साधू
लखण । मिट पुन्य हाट जा आगाधर लाला ॥

१० ॥ हां ॥ इग्यारे पडिमा श्रावक तणी । इग्यारे अंगका होवो जाणरे लाला ॥ इग्यारे गुणधर वीरना । पाम्या छे पद निरवाणरे लाला ॥ श्री ॥ ११ हां ॥ बारे भावो भावना बारे पडीमा वहे मुनीराय‍रे लाला ॥ बारेवृत श्रावक तणा। बारे तप तपो सुखदायरे लाला ॥ श्री ॥ १२ ॥ हां. ॥ तेरे क्रीया परहेरो । तेरे काठीया कीजे दूररे लाला ॥ तेरे योग त्रजिंचका । तेरे चरित्र सुख भरपुररे लाला ॥ श्री ॥ १३ ॥ हां. ॥ चउदे भेद जीव राखीये । चीतारो चवदें नेमरे लाला ॥ चवदे पूर्वनो ज्ञान छे । चवदे राजु लोक कह्यो एमरे लाला ॥ श्री ॥ १४ ॥ हां ॥ पंधरे भेदे सिद्ध हुवा । पंदरे परमाधामी देवरे लाला ॥ पंदर दिवसको पक्ष

कीयो । किसन सुकल वो छेवरे लाला ॥ श्री ॥ १५ हां ॥ दोय पक्ष एक मास छे । दोय मास ऋतु होयरे लाला ॥ तीन ऋतु एक अयन छे । दोयँ अयने संवत्सर जोयरे लाला ॥ श्री ॥ १६ ॥ जोयण कुप चोरस विये । भरे थालग्र कोयरे लाला । सो सो वर्षे एक काडना । ते स्वाली एक पले होयरे लाला ॥ श्री ॥ १७॥हा ॥ दश कोडा कोड पले सागर कह्या । दश कोडा कोड सरपणी होयरे लाला । उन सरपणी पण एतली ॥ वीस कोडा कोड काल चक्र जोयरे लाला ॥ श्री ॥ १८ ॥ हा ॥ अनन्त काल चक्र जीवडो । भम्यों चार गतीने मायरे लाला ॥ पण समकित दु लभ करी चार बाल थकी कारज थायरे ला

ला ॥ श्री. ॥ १९ ॥ हां ॥ नीठ २ नर भव मिल्यो ॥ सुनी जिनवरनी वाणरे लाला ॥ सरधी फरसी जिण जीवडे ॥ ते पामे पद निरवाणरे लाला ॥ श्री ॥ २० ॥ हां ॥ संमत उन्नीसे छपने। फागण वदी दुज गुरूवाररे लाला ॥ पटीयाले देश पंजाबमें । छे राज सिंह सिरदाररे लाला ॥ श्री ॥ २१ ॥ हां ॥ केवलरिख पन्नरे तीथी । गाइ बुद्ध प्रमाणरे लाला ॥ हलु करमी सुण चेतसी ॥ सरधी जिनवर वाणरे लाला ॥ श्री ॥ २२ ॥ इति

॥ शीखामणकी सझाय ॥

॥ जिनवाणीश्रवणे सुणीजी ॥ जिनमारग में आय ॥ जीव अजीव जाण्या विनाजी । किमजैनी नाम धराय ॥ भवीकजन हीये वि चारी रे जोय ॥ १ ॥ सुखी होण सहूको स पेजी । सुखकी न जाणे धाम ॥ षट काया ह णना थकांजी । कहो किम सुखीया थात ॥ भ ॥ ही ॥ २ ॥ चीरो लागे आगली जी ॥नटफ २ दु ख पाय ॥ छेदत भेदत जीवने जी । दया न आणे घटमाय ॥ भ ॥ ॥ही ॥ ॥ ३ ॥ त्रस स्थावर जीवा तणाजी । लूटे द रषी प्राण ॥ समकिती नाम धराइयोजी मि थ्यातीरा एलाण ॥ भ ॥ ॥ही ॥ ४॥ चीर फा

ड भडिता करेजी । कंद मूल सब खाय ॥ रात्री भोजन कर्या थकांजी । किण रीते जैनी थाय ॥ भ ॥ ही. ॥ ५ अणगल पाणीपिवतो-जी । अणगल नीरे न्हाय ॥ अणगले कपडा धोवणाजी । साबण खार लगाय ॥ भ. ॥ ही ॥ ६ ॥ पाणी ढोले दयाविनाजी । वे वे मोरी खाल ॥ त्रस जीव तिणमें मरेजी । चाले अज्ञानीरी चाल ॥ भ ॥ ही ॥ ७ ॥ सुल्या धान वेंचे सेखेजी । जंतर घाणी पि-लाय ॥ रात दिवस आरंभ करेजी । जरा द-या नही लाय ॥ भ. ॥ ही ॥ ८ ॥ कुशी कु-वाडा पावडाजी । वेंचे शस्त्र अजाण ॥ एक-उदररे कारणेजी । करे नर्क री खाण ॥ भ ॥ ही ॥ ९ ॥ शीखामण देतां थकां जी । मन

में म लाजो रोस ॥ ओषध तो कडवी पीया जी । मिटे आत्म रो दोष ॥ भ ॥ ही ॥ १० ॥ सुधभाव हिरदे धरोजी । मतकरो किंचित अकाज ॥ जीवाकी जतना करोजी । सीजे वांछित काज ॥ भ ॥ ही ॥ ११ ॥ समत उ गीसे छपनाजी । कातीवद आठू जंबुमाय ॥ अनर्था दडने छोडीयेजी । कहे केवल हित लाय ॥ भवि ॥ हीये ॥ १२ ॥

॥ बार मास(महीना) की सज्झाय॥

सुनोजी भवीजीवां । जतन करोजी थारे मामम ॥ आ ॥ चेत कहे तू चेत चतुरनर । नी.न नरव पेछाण ॥ अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु जी । धर्म दयामें जाण हो ॥ सु ॥ १ ॥ वे

शाख कहे विश्वास न कीजे । छिन २ आयूष्य छीजे ॥ छेकायकी हिंशा करतां । किण विध प्रभुजी रीजेजी ॥ सु ॥ २ ॥ जेठ कहे तूं है अती मोटो । किसे भरोसे बैठो ॥ दिन २ चलणो नेडो आवे । लेले धर्मको ओटोजी ॥ सु ॥ ३ ॥ अषाड कहे आत्म वस करीये । सबही काज सुधरीये ॥ थोडा भवांके मांय निश्चे । मुगत तणा सुख वरीयेजी ॥ सु ॥ ४ ॥ श्रावण कहे कर साधूकी संगत । लेले खरची लार ॥ बार २ सतगुरु समजावे । व्यर्थ जन्म मत हारजी ॥ सु ॥ ५ ॥ भादव कहे भगवंतकी वाणी । सुनीया पातक जावे ॥ शुद्ध भावसे जो कोइ सरधे । गरभवास नहीं आवेजी ॥ सु ॥ ६ ॥ आसोज कहे तूं

आछी करले। नर भव दुर्लभ पायो ॥ धर्म ध्यान में सेंठो रहीजे । मत पडजे भर्ममांयोजी ॥ सु ॥ ७ ॥ कार्तिक कहे तु क्यां तकताहे । हिर दय माही धीचारो ॥मातापिता सुत बेन भाणजा। अन समे नहीं थारोजी ॥ सु ॥ ८ ॥ मगसर कह मृग समो जीवडो । काळ सिंघ विकराळ ॥ मुझ्यो आऊखो उठ चलेगो । का द...ारगा जाल्जो ॥ सु ॥ ९ ॥पोष कहे तूं पाप कुटव । । परभवसे नहीं डरता ॥ पाप क्यों दुरगतमें पडताजी मोहमांहे उलज्यो । कर ॥ धन कुटंब सय छोड ...यगो थारोजी ॥ सु ११ ...ग खलो । ज्ञान तणा

रंग घोली ॥ कर्म वर्गणा गुलाल उडावो । जला भव भ्रमण होलीजी ॥ सू ॥ १२ ॥ उन्नीसे पचास फागणे । नाथदुवारे आया । गुरु खुबारिखजी प्रशादे । केवल रिख वणायाजी ॥ सुण ॥ १३ ॥

॥कुगुरु की सज्झाय॥

कुगुरु संग न कीजीये । कुगुरु छे दुःख दाय हो भवीयण ॥ कू ॥ आ. ॥ जिम छिदर नावा जलभरी । पेली आप डूबाय हो भवीयण ॥ पाछे डूबोवे पारने ॥ तिम कुगुरु-दुःख दाय हो भवयिण ॥ कु ॥ १ ॥ काष्ट नावा छिदर बिना । पत्थर उतारे पार हो भवीयण ॥ तिम सतगुरूना संगथी । पापी

गया मोक्ष मझार हो भवीयण ॥ कु ॥ २ ॥ भूल्या अटवी में पड्या । कु स पामेविन खाण पान हो ॥ भ ॥ तिम भूल्या धर्म अनादको । पीडावे अज्ञान हो ॥ भ ॥ कु ॥ ३ ॥ केइक हिंस्या पोते करे ॥ करावे वे उपदेश हो ॥ भ ॥ केइ जीव बचाया पापकहे ज्यारे नहीं समकितरी रेप हो ॥ भ ॥ कु ॥ ४ ॥ शुद्ध मारग पाले तेहनी । निंधा करे धरे द्वेष हो ॥ भ ॥ भारी । करमा जीवडा । आगे पामसी क्लेष हो ॥ भ ॥ कु ॥ ५ ॥ हिंसा झूट चोरी नारी । परिग्रह तजे जेह हो ॥ भ ॥ तेहीज सद्गुरु जाणजो ॥ भक्ती कीजो धर नेह हो ॥ भ ॥ कु ॥ ६ ॥ उगनीसे गुणसट पोपकी । वद एकम नकाणी माय हो भ ॥

केवल रिख कहे कुगुरूको । संग तज्या सुख थाय हो ॥ कु ॥ ७ ॥

॥ सात दुर्व्यश्नकी सझाय ॥

जीवा वारुं छूरे म्हारा वालहा । तजो सात व्यश्न दुःखदाइ जी ॥ ज्यां नर सातू सेवीया । ते तो मर दुर्गतमें जाइ ॥ १ ॥ जीवा वारुंछुं जी म्हारा वालहा ॥ आं. ॥ जुवा खेलण नहीं भला । यह तो जेह खेले नर नारो जी ॥हारी पांडव द्रौपदी, बली राज गया सहु हारोजी ॥ जी. ॥ २ ॥ मदिरा पीवे मूरखा । ज्याने शुद्ध न रहे तिल मातोजी ॥ लोग हंसे निंदा करे । बली परवश रहे दुःख पातोजी ॥ जी. ॥ ३ ॥मांस भक्षे मदमे छके । वली

कद मूळ सब खावेजी ॥ भक्षा भक्ष गिने न हिं । ते तो मरीने दुर्गत जावेजी ॥ जी ॥ ४ ॥ वश्या प्रीत धन कारणे । यातो हाव भाव दिखलावेजी ॥ बीते धन जब गांठको । यातो तुर्त ही बदल जावेजी ॥ जी० ॥५॥ लूटे प्राण परजीवका । येतो हंस हंस खेलशी कारजी ॥ करुण दिल आणे नहीं । ज्यारा खोटा हासी हवालो जी ॥ जी ॥ ६ ॥ चोरे धन काइ पारका । याने देवे कलेजे दाहोजी ॥ दु खीया करे परजीवने । कहो आप सुखी किम थाहाजी ॥ जी ॥ ७ ॥ परनारी प्रत्यक्ष बुरी । याता कही जिनश्वर रायाजी ॥ जीवत चूट कालजा। याता मुश नर ल्जायोजी ॥ जी ८ ॥ उगणीस उपन भला । अम्माल पजावेले

मांइजी ॥ फागण सुद आठम गुरु । कहे केवल रिख हितलाइजी ॥ जी ॥ ९ ॥

॥ आठ मदकी सज्झाय ॥

मद मत कीजो उत्तम सज्जन तुम । ये तो मद छे अती दुःखदाइ हो लोए ॥ आ ॥ आठ मद सुत्रमें दाख्या । ते तो न्यारा न्यारा देउं बताइ हो लोए ॥ एक मद (मद्य) पीया दुःख पावे । तो आठु वालारो कांइ थाइ हो लोए ॥ मद ॥ १ ॥ जात तणो मद कीयो हरकेसी । तो चंडाल कुल लीयो वासो हो लोए ॥ तप कर कायाने उज्वाली । मुक्त गया कर्म करी नासो हो लोए ॥ म ॥ २ ॥ कुल मद कीधो मरियंच कुवरे । तो कोडा कोड

सागर भमाया हो लोए ॥ चौवीसमां जिन हो शिव पहुंता । तो मदथी घणो दुःख पाया हो लोए ॥ म ॥ ३ ॥ धल मद श्रेणिक राजा ए किधो । तो नर्क तणो दुःख लीधा हो लोए ॥ आवती सर्पणी तिर्थकर होइ । मुगते जावसी सीधा हो लोए ॥ म ॥ ४ ॥ सनम कुमार देवविप्र आगे । रूप मद करी पोमाया हो लोए ॥ रोम रोममें क्रिम उपन्या सातसे वर्षे सुख पायो हो लोए ॥ म ॥ ॥ ५ ॥ मुनी करकुंड तप मद कीयाथी । तपस्यानी अनराय आइ हो लोए ॥ ठडो ऊनो लाइने खात । पण पोरसी तपस्या न थाइ हो लोए ॥ म ॥ ६ ॥ दशारण भद्र रिद्धीनो मद धीधा । इद्र गाल्यो मद संयम लाधो हो लो

ए ॥ पाछो इंद्र आइ पग लाग्यो । आत्म कारज सीध्रो हो लोए ॥ म ॥ ७ ॥ स्थूलभद्र सुत मद करने । पूरण अर्थ नहीं पाया हो लोए ॥ गुणंवत भणी अभीमान म कीजो । नित रीजो आत्म नमाया हो लोए ॥ म. ॥ ८ ॥ षट खंड चक्री ब्रह्मदत्तराया । लाभना मद मांहे आया हो लोए ॥ मुलगी गमाइ नर्क सिधाया । तो तेंतीस सागर दुःख पाया हो लोए ॥ म ॥ ९ ॥ इम पूर्वला द्रष्टांत सांभली । दो आठू मदने टाली हो लोए । केवलरिख कहे सुरत सांभलो । पाइ जो गवाइ उजवालो हो लोए ॥ म. ॥ १० ॥ संमत उन्नीसे इगसट साले । नाशिक नगरी शेके काले हो लोए । चेते सोही सु-

ग्वीया थावे । रगपन्चमी शनीवारे ह्यो लोए ॥म ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ धर्म झाझकी सझाय ॥

मोडन आठ लगर वु खवाइ । शिदपुर जावण जहाझ बनाइ ॥ आ ॥ जन्म मरणके जलमें देखो । सजमरुपी जहाझ तिराइ ॥ सतगुरु ज्यारा खेवणवाला । भवी जीवाको लीया बे ठाह ॥ तो ॥ १ ॥ पचमहाव्रत पंचरग न्यारा । द्रढ मन स्थापके ध्वजा उडाइ ॥ ज्ञान रुपणी डोर लगी है ॥ शूकल ध्यानसे उंची चडाइ। ॥ तो ॥ २ ॥ पन्च सुमत ले पंच जिन बेठा पचमी गतको दूवारे उमाइ ॥ द्वादशवाला झा दशताइ । मूर्ख देखक रह्या मुरजाइ ॥ ३ ॥

उज्वल भावकी पवन लगी जब छिनमें पहोंची द्वीपके माइ ॥ केवल रिख करजोड वीनवे । ज्ञान दुर्बीन स्युं मुगत बताइ ॥ तो. ॥-॥ ४ ॥ अमर सेहरमें अमर हो गये । उगणीसें पचावन गाइ ॥ फागण सुदी चवदशके दिवसे । स्थावर थिरता अंत हे नाहीं ॥ तो. ॥ ५ ॥

॥चित समाधिके दश बोलकी सज्झाय॥

चित्त समाधी होवे दश बोलां । भाख्यो श्री जिनराजरे प्राणी ॥ पुण्य करीने पामे चेतन । यह नर भवमें साजरे प्राणी ॥ चित ॥ ॥ १ ॥ आ ॥ धर्म उपदेश सुणे जिनवरको । पामे चित हुल्लासरे प्राणी ॥ समकित रत्न प्रगटे घटमें । अनुभव रस कस खासरे प्रा-

णी ॥ चि ॥ २ ॥ देव अपूर्व रिद्धि वेक्रय । देखीचित्त हुपारे प्राणी।आगारी अणगारीकरणी कीधाना फल पायरे प्राणी ॥चि ॥ ३ ॥सुप ना साचा सुखना दाता । देखे पिछली रातरे प्राणी ॥ जाग तुर्त निंद्रा नही लेवे । पामे फ ल साक्षातर प्राणी ॥ चि ॥ ४ ॥ जाती स्म रण ज्ञान लेइने । पूर्व भवांतर जाणारे प्राणी । उत्कृष्टा नवसे लग देखे ॥ सन्नी तणा ए-नाणारे प्राणी ॥ चि ॥ ५ ॥ अवधी ज्ञानना भेद असख्या । अवधी दर्शन संगरे प्राणी ॥ देखर्ता बुद्ध जग चैतन्यकी । अपडवाइ मन रगरे प्राणी ॥ चि ॥ ६ ॥ मन पर्यवका भेद दोय छे । रजु विपूल तस नामरे प्राणी ॥ ए उपज्या विन ठामे आवे । गुण तणा ए ठा

मरे प्राणी ॥ चि ॥ ७ ॥ केवल ज्ञानने केवल दर्शन पाम्या पद निरवाणरे प्राणी। जन्म जरा और मरण मीटावे। सिद्धपुर सुख अहीं ठाणरे प्राणी ॥ चि. ८ ॥ पंडित मरण करे जे प्राणी। उतम करणी साजरे प्राणी ॥ आवागमनरा दुःखसे छूटे। इम कह्यो जिन रा- जरे प्राणी ॥ चि ॥ ९ ॥ संमत उनीसे छप्प- नका। वैशाख वद नव मंगलवाररे प्राणी। स्यालकोटमें कहे केवल रिख। दश बोले जय जय काररे प्राणी ॥ चि ॥ १० ॥ इति

॥ कमलावतीकी लावणी ॥

तृष्णा तजनी है अतीदुक्कर। धन जेह तृ- ष्णा परहरे ॥ जिन तृष्णा त्यागी। ते नर भ-

वसागरेस तुर्त तिरे ॥ टेर ॥ इक्षुकार नगरीरे
को राजा । इक्षू नाम तिहां राज करे ॥ कम
लावती राणी । सुख भोग विलासमें दिन गुजरे
॥ भग्गू पुरोहित जस्सा भारजा दोइ पुत्रपे मो
ह धर ॥ रखे दिक्षा लेवे इसचिंती पल्लीमें वास
कर ॥ मेला ॥एक दिन अण चिंतीया साधू
तिहा चल आयजी ॥ सूण उपदश दोइ पुत्र
तुर्त वैरागी थायजी । मा बाप तिणरे मोह से
भी चउ नग चिट मायजी ॥ प्रभुन धनको त्याग
गगे राजा खबर ए पायजी ॥ मिलत ॥ लाभ
जगा अतममें भारी । राजा जिनकी रिद्धहरे
॥ जिन ॥ ८ ॥ लगी भाडायी हेड नगरमें ।
राणीजीकी निजर पड़े । या मनम धीधार आ
ज य राजा किणकी रिद्ध रर ॥ ठग्या गामके

प्रधान दंडया के कोइ गडीयो धन जडे । पूछे दासीसे तब चेडी चंचल अर्ज करे ॥ झेला ॥ भग्गू प्रोहित रिद्ध त्यागी । राय खजाने जाय-जी ॥ हूकम करो बाइजी मूजपे । लावुं मेहेल-रे मांय जी ॥ राणी कहे एसा जो धनकी । म्हा-र इच्छा नांयजी ॥ राजारी तृष्णा देखने । राणीजी दिल मुरजायजी ॥ मिलत ॥ जाकर समजाऊ राजाने । इण धन्नसे नहीं भव दुःख टरे ॥ जिन. ॥ २ ॥ उतर मेहेलसें आइ सभामें । हाथ जोड यों अर्ज करे ॥ म-हाराज सुणीजे । या रिद्ध उत्तम नहीं चित धरे ॥ दियो दान हाथसे फिर लेवो । जुगत नहिं सब जन उचरे ॥ सामी सोचना कीजे । मेल सम जाणी उत्तम परहरे ॥ झेला ॥ वम्यो

आहार वाछा करे ते नीच जात केवायजी। इस सुणी राजाजी बोल्या राणी तुज शुद्ध नायजी ॥ मद्य छकी गेलादी परे थाले छे खोटी वाय जी॥ तुं छोडे इणसमे तो तुजने दु शावासी सवायजी ॥ मिलत॥ राणी कहे में यह छिटकाइ इण धनमे कहोजीकसे काज सरे॥ जिन ॥ ३ आज्ञा दयो संजम लस्यूं। तुम पिण छांडो महाराया ॥ या निद्ध दुखदाइ। तुछ जीतव काज क्यो ललचाया ॥ राजा राणी संजम लक्कर। आतम कारज सिद्ध कीया ॥ धन छ उ नर नारी। जिनराज न नगरका सुख लिया ॥ इगारा ॥ इण पचम कालमें सुख थोडा दु ख सवायजी। जन रह चतुर मुरख प ल्या गाना य रजी ॥ उत्तम गुणमठ चेत

सुदी, तीज शुक्र आयजी । हाजा पुरमें केर वल रिख ए ख्याल जोड सुणायजी ॥ मिलता तृष्णा तज समता धारे । ते संसार सागा सेज तरे ॥ जिन ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ कालकी लावणी.

काल बडा बलवान । कालने सब जग लुंटाजी ॥ क्या बुढा क्या जुवान । बाल नहीं इस छूटाजी ॥ टेर ॥ बडे २ राजान जुवान केइ । सूरा जोधाजी ॥ चडे घोड़ु अस्वार हाथी के सोसे होदाजी ॥ दे दुश्मनपर धीव जाय फिर डेरा देनाजी ॥ जिहा बी आ गया काल निंद्में सूता रहेताजी ॥ चाल ॥ मनकी रह गइ मनमें । महाराज रह गइ म-

नमें ॥ मिलत ॥ आयूष्य जिनका खटाजी ॥
॥ क्या ॥ १ ॥ कहुं रावणकी घात । राज
लकाका करताजी ॥ कुंभकरण और विभी
षणथें । जिनके भ्राताजी ॥ इन्द्रजीतसा पूत
और था । बहु परवाराजी ॥ किया सीताका
हरण लछमणने जिसकु माराजी ॥ चाल ॥
फजीती होती । म्हाराज फजीती होती ॥मि
राज बंदरोने लूटाजी ॥ क्या ॥ २ ॥ चकरी
महाबलवान सेभूमी छह खड रायाजी ॥
चगा सातमा खड साधन अभीमान जा ला
याजी ॥ हुवा जहाज अस्वार साथमें बहु सुर
लीनाजी ॥ और चक्रवृत यों मनमें चीनाजी
॥ मत्र मिटाया नवकार फांगणी रत्नसे घि
मक जी ॥ बेठी जहाज पाताल पुण्य ते

खुट गये विसके जी ॥ चा ॥ गया नर्क सप्त
मी । म्हाराज गया नर्क सप्तमी ॥ मि. ॥ तिहां
तो यमने कूटा जी ॥ क्या. ॥ ३ ॥ वसुदेवकृष्ण
म्हाराज हुवे तीन खंड के स्वामीजी ॥ छप्पन
कोडके नाथ दुवारका नगरी नामीजी ॥ खुट
गये जिनके पुण्यके रिद्धि सहु विरलाइजी ज
ल गया सारा गाम देखता क्षिणके मांही जी ॥
गये कसुंबी बनमें निर बिन तड फड करताजी
॥ आ गया उनका काल बाण जब प्राण जो
हरताजी ॥ चा. ॥ राम हुये साधू । म्हाराज
राम हुये साधू ॥ मि ॥ जगतकुं जाणा झूटाजी
॥ क्या ॥ ४ ॥ मथुराका राजा कंस जरासिंधका
जमाइजी ॥ जीवजसा घर नार देवीकी बेहन
केलाइजी ॥ गर्भ सात लिये मांग वसुदेव वाच

हारोजी ॥ हूवे कृष्ण जब पैदा खल गये जेड
कुवारे जी ॥ नंद यशोदा घर रहते कंसने ख
बर जो पाइजी ॥ मारा कृष्णने कंस काल
जब पहुंचा आइजी ॥ चा ॥ फते हुवा का
रज । महाराज पने हुवा कारज ॥ मि ॥ पुण्य
फल उनका कूठार्जा क्या ॥ ५ ॥ वस किया
काळकू जिनने ते तो रुद्र सुत्र पायाजी ॥
बडे २ मुनीराज कालका जोर मिटायाजी ॥
सुण धेलो नग्नार जात दूर सो केलाइजी ॥
काल बडा बलवान फिर त्रीलोक हुवाइजी ॥
समत उर्णास गुणगट सुत्र श्रावण तीस पा
इजी नुधवार गुनेरा जाट केवल रिख गा
इजा ॥ चा ॥ [illegible] । महाराज आ
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] इराम चूटा

जी ॥ क्या ॥ ६ ॥

कायाकी चेतनको शिखामण लावणी

चिदानंद जगके सेलाणी । वसो हमारी नगरी जब तक है दाणा पाणी ॥ टेर ॥ काया केती सुणरे चेतन दो दिनका नाता । तेरी खिजमतमें ऊभी रही हुं अब क्या फरमाता ॥ करो मजा दिन रातके जोडी तेरी मेरी खासी ॥ मुझे छोड मत जाणारे चेतन लगा प्रेम फासी ॥ अरज करुं करजोड लालजी मे हुं पटराणी ॥ वसो. ॥ १ ॥ सुण कानसे राग छतीसो जीवडा सुख पावे ॥ रह्या इस्कमें भींजके दुर्गन्ध आगे दिखलावे ॥ छोडो खोटा गाणा जो परभवों सुख चावे ॥ येही कान

से सुणो वचन जिनवरका मन भावे ॥ मान हमारी वातके चेतन हुं में अगवाणी ॥ वसो ॥ २ ॥ लगा नेणका ध्यान रुपको स्वहा २ इवे । नारी जोबन भरीके नेसर बाण समी फके ॥ नहीं है तुमकु लाज के चेतन घडा २ पेख ॥ देख तेरी वदवोइ के न्याती गोती में मेहुक ॥ जिनकी नीची द्रष्ट के भगवंतआप ममा जाणी ॥ वसे ॥ ३ ॥ अत्तर मोतीया गुलाब केवडा ॥ खम १ । और हीना ॥ नाक वासना लेना के उस्में हो गया लीना ॥ नाक नमन नहीं करता मगरुरीमें अकडाता ॥ रहगया । फिर जगतमें भमरा इससे वु ख पाना ॥ में तेरी खिजमतमें हुगी सुगधी ध णीयाणी ॥ वमा ॥ ८ ॥ मुखम चावे माल

के षटरस तुजको बहु भावे ॥ कंद मुल मद्य मांस खाय मर दुर्गतिमें जावे ॥ पडे मुद्गलकी मार दुष्ठको कहो कुण छोडावे ॥ खाय २ के जन्म गमाया पीछे पस्तावे ॥ में हुं तेरी दासीरे चेतन । भज तूं जिनवाणी ॥ वसो. ॥५॥ कर सोले सिणगार के देही देव सभी सोवे ॥ देख दरपणमें मुखडा मेरा चंद समा मोवे ॥ लगे अतर फूलके अबला लटका कर जोवे ॥ चले निरखता चाले के मुजसम और न को हावे ॥ अवसर आयो हाथ के चेतन मतकर तूं हाणी ॥ वसो. ॥ ६ ॥ कर सद गुरूकी संगत दुर्गतिका जड दे ताला । पांचू इंद्रिकीजे वशमें हो जग रक्षपाला ॥ बनास नदी गांव बडामें-केवल रिख गावे । जेठ मासकी सुद सात

मी । सहुंका मन भावे ॥ में तुजको समजाऊं लालजी समता चित ठाणी ॥ यसो ॥ ७ ॥

॥ दया की लावणी ॥

दया जगतमें है असी सुंदर । सुण ली जो सब नरनारे ॥ जिन पुरुषोंने दया जो पाली शास्त्रमें है विस्तारे ॥ टेर ॥ धर्मरुची जिन दयाके खातर । कडवा तुम्ब किया आ हार ॥ स्वार्थसिद्धमें जायवीराजे । हो रहे जय_ जयकार ॥ तैंतीस सागरका आयुष्य पाये । हो गये एका अवतार ॥ मनुष्य भवका लाथा ल के गय जा मुक्ती मझारे ॥ द ॥ १ ॥ ने मीनाथ ब्रावीसम जिनश्वर । कृष्ण वासुदेव ल लार ॥ छप्पन क्रोड जादव सभी आये ।

जान सजी खुब तैयारे ॥ तोरण आये पशु छुडाये । तज राजुल गये गिरनारें ॥ सती संगाते मुक्त सिधाइ अष्टकर्म बंधन टारे ॥ द। ॥ २ ॥ पार्श्व प्रभुजी कवरपणेंम । खेलत गये गामके बारे ॥ देख तापसकों पूछण लागे बोले तपसी अंहकारे ॥ तप जप करता लावा लेता । तुजको शुद्ध नहीं क्यारे ॥ जब बोळे पार्श्व कुमरजी । नाग नागणी क्यों जारे ॥ द. ॥ ३ ॥ लकड फाड जले सर्प काडी । दिया श्रवण जब नवकारे ॥ इंद्र इंद्राणीका पद देकर । आप लिया संमज भारे ॥ खमे परिसह केवल पाये । तारी जग तीरे संसारे ॥ पार्श्व प्रभु विख्यात जगतमें । नाम जप्या खेव पारे ॥ द. ॥ ४ ॥ चौवीसमे जिनराज दया

काज । मुनीवर अपने उगारे ॥ अवर्नीत शिष्य गोसाला बचाया । तेजु लेस्य से स्यारे ॥ और बहु नरनारी तारे । वरताये मंगला चारे ॥ सासन सुखकारी यह वरते नाम लिया होय निस्तार ॥ व ॥ ५ ॥ देव परिक्षा कारण आये । मेघरथ राजा दयाले ॥ रुप परेवो करी ससखेवो । बेठो गोदी मझारे ॥ पारधी मांगे भक्ष आपणो । राजा मांस निज दीयो स्यारे ॥ शांतीनाथ हुवे शांतीके दाता । पट पदवी सणा जे धारे ॥ व ॥ ६ ॥ परदेसी राजा अती पापी । केसी समण कियो उपगारे ॥ उपदश सुणाइ पाप छुडाइ । तर बेलासे दीयो तार ॥ क्षमा करी सुयाभदव हुवे । एक भवस कर स्यसा पार ॥ गौतमस्वामी कीनी

पूछा । राय प्रसेणी अधीकारे ॥ द. ॥ ७ ॥ मेतारज मुनी गया गोचरी । सोवनकार दियो आहारे ॥ सोवन जब कुकड ले चुगीया। नहीं बोल्या तब अणगारे ॥ सोवनकारेन दिया परिसहा । क्षमा तणा मुनी भंडारे ॥ कर्म खपाया मुगत सिधाया । सफल किया जिन अवतारे ॥ दया ॥ ८ ॥ मेघ मुनीश्वर गजके भवमें । सुशल्यो दीनो उवारे ॥ संसार परत कर नरभव मांही । श्रेणिक घर लीयो अवतारे ॥ आठ अंतेवर परणी परहर । तज्या राज और भंडारे ॥ कर प्रभू सेवा स्वर्गका मेवा । चाख लीया जिन तत्काले ॥ दया. ॥ ॥ ९ ॥ राजग्रहीको राजा श्रेणिक । महामंडलिक भरे भंडारे ॥ अमर पडो बजायो मु-

लकर्मे । फेल्या यशको विस्तारे ॥ क्षायिक समकिती तिर्थंकर पद । उपराजो तेहिज वारे॥ आवती सर्पनी पद्मनाभ जिन । होजासी शिव मझारे ॥ दया ॥ १० ॥ साधु करे स धारा जगमें जीव दया कारण प्यारे । दया जे पाले धन नरनारे सफल जिनोका अवतारे ॥ सम्मत उन्नीसे पच्चावन फागण, सुद दाशम मंगलवारे ॥ देश पञ्जावके अमृतसरमें केवलरिख करी ऊचारे ॥ दया ॥ ११ ॥

॥ पाच इंद्रिके गुणकी लावणी ॥

चित लगाकर सुणो चतुर नर, नरभव मुशकलसे पाया ॥ लख चौरासी भमता २ चिंतामणी हाथे आया ॥ टेर ॥ सतगुरू केरी

वाणी सुणकर कान पवित्र करो जिया ॥ विषय रागका संग निवारो अही इशकके वश मुया ॥ नेत्र जीवदयाको पाया । नीचा नेत्र जिनोने किया ॥ उत्तम जिनको केह लोगमें इस भव परभव सुखी हुया ॥ परनारी है दुःखकी खाण । रावण मर दुर्गत पाया ॥ लख ॥ १ ॥ नाक नमन कर देव निरंजन । येही पदार्थ जगमाइ । सुगंध वासनाको तज देना । अली लिपट मुवा पंकज जाइ ॥ फुल अत्तरकी गंधमें मोह्या ॥ नहीं सार कह्या जिनराइ । सुगंध दुर्गंध दोनू आये समता राखो सब भाइ ॥ गुरु गीतार्थका चरण भेटके सफल करो अपणी काया ॥ लख ॥ २ ॥ सरना रटो जिनवरके नामको । अशुद्ध शब्द

मत उधारो ॥ खान पानमें बीचार रख्खो । तजो अमक्ष कंदमुल आहारो ॥ पंखी राते नहीं चुगा लेवे मनुष्य होके क्यों धारो ॥ रसना वस पड मर गइ मच्छी । कठ छिदा अति दुखकारो ॥ अमक्ष भोजन रात जीमना हे भाइ अती दुःखदाया ॥ लख ॥ ३॥ यह काया है कल्पवृक्ष सम फल ले अब सुकृत प्यारे ॥ तप जप संमज जो बनी आवे सो चलसे तेरे लारे ॥ पायामेंका भाग देवो दानमें येही लक्ष्मीका हे सारे ॥ अहमदनगरमें कहे केवलरिख उन्नीसे साठकी साले ॥ अषाढ सूदी चवदसके दिवस जयजयकार सहु वरताया ॥ लख ॥ ४ ॥

॥ दान अधिकार लावणी ॥

जिनवाणी सार सूणो चतुर नर । जन्म सफल कीजे । पायामेका भाग दान दे । लावा ले लीजे ॥ टेर ॥ जिनवाणी रसखाणी प्याला अमृत सम पीजे । अवसर आया हाथ विषयमें चित्त नहीं दीजे ॥ सतुगुरु तारण जहाझ परिक्षा पेली ही कीजे । भेख देख मत भूलो के गुण अवगुणको शोधीजे ॥ शुद्ध साधू निग्रंथकी सेवा प्रेम धरी कीजे ॥ पाया ॥ १ ॥ दान मूल छे दोय जिनको भेद सुणो भाइ ॥ प्रथम अभय छे दान जीवोंकी करुणा चित लाइ॥ जो कोइ लूंट प्राणदयाकर उसको छोडाइ ॥ धर्म दलाली करो

प्रभु सूत्र में फरमाइ ॥ आत्म सम छे काया जाणी रक्षक हो रीजे ॥ पाया ॥ २ ॥ बीजो दान सुपातर शूद्ध निर्भय भणी देवे । षट कायाका पालनहारा बहुलो फल लवे ॥ • चउदे प्रकारे वस्त सुजती श्रावक घर रेवे ॥ जोग बन्या उलट भावे चित वित पातरने सेवे ॥ विनती कर बार २ साधू जीको नित्य दीजे ॥ पाया ॥ ३ ॥ इन सिवाय और दान ज्ञानको मोटो फरमायो ॥ धर्म उपगरण श्रावकने दे लाभज कमायो । दया तणी जिहां वाद्धि होवे उतम दरसायो ॥ हिंसा दान

• अन्न पाणी, मुखवास ऊनकावस्त्र सूत कावस्त्र मकान, पानरा बाजोट पाट, पगल पीछाना पूरण तलादी दवाइ ये साधुतके पास न रखे

को मार्ग भवीने परलन नहीं आयो ॥ अह-मदनगरमें कही केवलरिख हितधर सुणीजे ॥ पाया ॥ ४ ॥ इति

॥ उपदेशीलावणी ॥

मुझ दोष नहीं देना किस्कु कर्म लिखा सो थावेगा ॥ जो जिनवरका भजन करेगा सो भव २ सुख पावेगा ॥ टेर ॥ मनुष्य जन्म मुस्कल से पाया योंही इसको खोवेगा ॥ सु-कृत करणी किया विना चेतन । परभव मांहे रोवेगा ॥ बार २ सतगुरु समजावे मोह नीं-दमें सोवेगा ॥ विन कमाइ खाली हाथे टुक २ साले जोवेगा । सुकृत धर्म दान जो कर ता सो तेरे संग आवेगा ॥ जो. ॥ १ ॥ देवग-

नी में देख देवता ओछी रिद्धी शाला धणी झुर २ करके रिजर होवे नहीं सुकृत की करणी। हाय हाय कर उम्मर गमाइ पाप माय बुद्ध फेली घणी ॥ किंचित पुण्य स देवगती में पन्वी अभागी देवतणी ॥ गज एरावण देवता हाकर इन्द्र का सिर चढावगा ॥ जा ॥ २ ॥ मनुष्य भवमें वसुदव ओर चक्रवतका पद माटा ॥ वन २ नरत्र दवमा लेने है जिनका अटा ॥ चउद रत्न और नवि निधानसे किसी व न ा नही टाटा ॥ किसनको तो अन्न नहीं मिलता पीनका नहीं है लाटा ॥ जा निण ना मा नर्गी आत्र करणी बिन पस्तावगा ॥ जा ॥ ३ ॥ श्रीजचका गतिमें ... अ अ ग त का पवरी प गा ॥ सहग्र द

वता सेवे जिनको । को जननी उनको जा-
या ॥ केइ भुखे प्यासे बंधे खूटें केइक वोज
उठा लाया ॥ निगोदकी तो वेदना सुण
थर काळजा थराया ॥ इम जाणी धरादया
दिलमें तो दुःख सहु छूट जावेगा ॥ जो
॥ ४ ॥ नर्क गतीमें देख वेदना परमाधामी
दत हैं । वैर बदला बांधा जिसीका फल भु-
गत कर लेत हैं ॥ इम कर्मकी गत है दुष्कर
केवल ज्ञानी केत हैं । दुकृतसे दुःख सुकृतसे
सुख सर्वही जीव जंत लेते हैं ॥ देश पंजाव
के कसवे दसकेमें । केवलरिख पद गावेगा
॥ जो ५ ॥ इति ॥

॥ गुरु प्रसाद वसत ॥

सतगुरु समजाया अन्धेरा दिलका मीटा या ॥ टर ॥ ढूहत ढूंढम सत्धर्म ढुढीया सो ही केलाया । तत्व पदार्थ हाथ लगा मुज । हिरदा मांही ठसाया । भर्म मेरा दिलका मिटाया ॥ स ॥ १ ॥ ज्यू दधी माहेसे मा खण ढूढ । त्यो दया में धर्म घताया ॥ जि मत्रा सब द जाण सा जाणे । मुर्ख भेद न पाया । जन्म जिन व्यर्थ गमाया ॥ स ॥२॥ अहिंशा पम धम सुखदाता । वेद पुराणे स गाया ॥ हिंसक पापी मिथ्यामत थापी । ता णा ताण मचाया । मर्म कुछ रती नहीं पा या ॥ स ॥ ३ ॥ भागउपभोगकी करी मर

जादा । श्रावक नाम धराया । सोही भोग त्यागीको लगावें, त्यागन भंगकराया । व्यर्थ ढोंग मचाया ॥ स ॥ ४ ॥ जीव हण्या ती- नो कालमें । धर्म यथा न थाया ॥ न्याय सोच हिरदामें बीचारो । केवलरिख दरसाया । त्याग मिथ्यात्व हटाया ॥ स ॥ ५ ॥

॥ सुमत कुमत संगकी होली ॥

ऐसी होली खेल ज्यासू दुर्गत दूर टलेरी ॥ टले—री ॥ ऐसी ॥ टेर ॥ कुमत सुमत दो नारी हे चेतन । सज सिणगार खडीरी ॥ कुमत सखी दिलकी अती चंचल । चेतन सं- ग अडीरी ॥ ऐसी ॥ १ ॥ सूण चेतन तूं वात हमारी । लेवू परिवार बूलारी ॥ हिल

कीनी रंग रलीरी॥ ऐसी ॥ ६ ॥ वैराग्य रंगकी भर पिचकारी। सन्मुख डाल दइरी ॥ भींजत भाव चड्यो चेतनको। दुर्गत टाल दइरी॥ ऐसी ॥ ७ ॥ मुगत मेले की सेहल कराइ । अमर जो पंदवी दइरी ॥ देश पंज्जाब में सेहर समाणे । केवलरिख कहीरी ॥ ऐसी. ॥ ८ ॥

॥भाव होली ॥

होली खेलो चतुर नर। चित ठिकाणे लाय ॥ ॥ टेर ॥ चार महीना चौमासीको दिन, पोषो करो हित लाय । षट कायाकी जतना कीजे, जीव सहु सुखपाय ॥ होली ॥ १ ॥ कर्म रुपीयो काष्ट जलावो । तप रुपी आगी लगाय ॥ शुभ ध्यानकी झाल चडावो

तो उची गतमें जाय ॥ होली ॥ २ ॥ स्वध र्मि सब ही मिल कीजे । ज्ञान रंग सुखदाय ॥ सतगुरु सीख हीये धर लीजे, तो कर्म धूल उड जाय ॥ होली ॥ ३ ॥ सुमत सखीस हिलमिल खेलो । तो मुगत नगर ले जाय ॥ अटल राज चसनको मिल्यो जब । जन्म मरण मिट जाय ॥ होली ॥ ४ ॥ सम्मत उ नीसे छापनका ॥ फागण सुद पनममांय ॥ गाम काछव चोमार्मा पडीकमणो कीनो के-वलरिख आय ॥ होला ॥ ५ ॥ इति

॥ ज्ञान होली ॥

मुनीश्वर खेलत ज्ञान की होली ॥ जिन वचन में आत्म वोली ॥ मु ॥ आ ॥ मति

श्रुति ज्ञान निर्मळ नीरमें। संजम रंग दीयो घोली॥ वैराग्य भाव की ले पिचकारी। सुमत सखी पर ढाली॥ मु १॥ आठ कर्मकी अनंत वर्गणा। गुलाल उडाइ भर झोली॥ अपूर्व भाव जग्यो आतमको। भागीकुमताभोली ॥मु॥२॥ अवध असंख्य बाजित्र सूरागी। मनपर्यव हृदय खोली॥ केवलले के नीकेवल होवा। साश्वत सुख वरो टोली॥ मु॥३॥ उगणीसे पंञ्चावन फागण। सुद आठम रंगरोली॥ अमृतसरसे केवल रिख कहे। शास्त्र वचन ग्रहो तोली॥ मुनी॥ इति॥

॥ आत्म शुद्धी—केरवा॥

अरे मेरे प्यारे विसर मति जारे॥ विसर

तो उची गतमें जाय ॥ हाली ॥ २ ॥ स्वध र्मि सब ही मिल कीजे । ज्ञान रंग सुखदाय ॥ सतगुरु सीख हीये धर लीजे, तो कर्म धूल उड जाय ॥ हाली ॥ ३ ॥ सुमत सखीस हिलमिल खेलो । तो मुगत नगर ले जाय ॥ अटल राज चतनको मिल्यो जब । जन्म मरण मिट जाय ॥ होली ॥ ४ ॥ सम्मत उ गनीसे ठपनका ॥ फागण सुद पुनममांय ॥ गाम काछव चौमासी पडीक्रमणो कीनो केवलरिख आय ॥ हाला ॥ ५ ॥ इति

॥ ज्ञान होली ॥

मुनीश्वर खेलन ज्ञान की हाली ॥ जिन वचन में आसम धारि ॥ मु ॥ आ ॥ मति

श्रुति ज्ञान निर्मळ नीरमें । संजम रंग दीयो घोली ॥ वैराग्य भाव की ले पिचकारी । सु-मत सखी पर ढाली ॥ मु १ ॥ आठ कर्मकी अनंत वर्गणा । गुलाल उडाइ भर झोली ॥ अपूर्व भाव जग्यो आतमको। भागीकुमताभोली ॥मु ॥ २ ॥ अवध असंख्य बाजित्र सूरागी । मनपर्यव हृदय खोली ॥ केवलले के नीकेवल होवो । साश्वत सुख वरो टोली ॥ मु ॥३॥ उगणीसे पंचावन फागण । सुद आठम रं-गरोली ॥ अमृतसरसे केवल रिख कहे । शास्त्र वचन ग्रहो तोली ॥ मुनी ॥ इति ॥

॥ आतम शुद्धी—केरवा ॥

अरे मेरे प्यारे विसर मति जारे ॥ विसर

मति जारे मूल माति आरे ॥ टेर ॥ चैतन्य चीर अनादीका मैला । धोकर साफ करत क्यों नी जारे ॥ अरे ॥ १ ॥ निर्मल नीर ज्ञान गंगा जल । कुदरतके दाग को साफ कर जार ॥ अ ॥ २ ॥ सजम साबन सपेती लावे । किरयाकी कूंडी जमा क्यों नी जारे ॥ अ ॥ ३ ॥ आडन आतम आनद पावे । निर्मयकी सेज पर मा क्यो नी जारे ॥ अ ॥ ४ ॥ कहे के वलरिख यों हो पवित्र । सरसत बचन सुणत क्यों नी जार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ उपदश-वेलावल ॥

क्या मल २ कर धोवे । काया क्या मल१ कर धाव ॥ तेरा अतर शुद्ध नहीं होवे ॥

काया ॥ टेर ॥ न्हाय धोय श्रृंगार बणाया। दरपणमें मुख जोवो पलक २ रूप पलटत तेरा। हिरदय ज्ञान नहीं जावे ॥ काया ॥१॥ कडा कंदोरा कंठी डोरा। झगमग त्रिया मोवे ॥ सुंदर रूप अनोपम दीपे। पलकमें पनको खोवे॥ का ॥ २ ॥ लाख उपाय करया सेती पण। काया निर्मल नहीं होवे ॥ जो पवित्र जाणे सो मूर्ख। पोमाइ घोइ डूबोवे ॥ का ॥ ३ ॥ तप जप जल साबूथी धोइ। केवलरिख शुद्ध होवे ॥ मुम्बाइ के घाट कोपरे। उगणि इकसट के पोष सोहवे ॥ का ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अनुभव भांग वसंत ॥

संजमकी मुज भांग पीलाइ। मेरे आ-

न्यों में लाली छाइए ॥ टेर ॥ वैराग्यकी बूटी मनन रमम भींजोइ ॥ क्रियाकी कुंडी ब णाइजी ॥ स ॥ १ ॥ ज्ञानका घाटा यतना का साफी ॥ छाणत अति सुधराइजी ॥ स ॥ २ ॥ पीवत परम मगन हूए मनमें । लहर हीय न समाइजी ॥ स ॥ ३ ॥ छाक चढी चतुर गती मटग । शिव रमणी सेज बीछा इजी ॥ स ॥ ४ ॥ पोढत परम सुख पात के बलरिव ॥ मनगुरु मुजरा पिलाइजी ॥ स ॥ ५ ॥ ऊक्कर गहर सरापा माइ ॥ फागण मास गाइजी ॥ स ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ समकित—ढकोड ॥

सम कितकी रवी जाहार ॥ जाहार मे

प्यारे ॥ समकितकी ॥ टेर ॥ सद् उपदेश सुणा सतगुरुका ॥ मिटा मिथ्यात अन्धकार अंध०मेरे प्यारे ॥सम.॥ १ ॥शुद्ध देवगुरु धर्म पहछाण्या। लीया ज्ञान रस सार ॥ सार मेरे प्यारे ॥ सम.॥ २॥ देव निरंजन गुरु निरलोभी ॥ धर्म दयामें धार ॥ धार मेरे प्यारे ॥ सम. ॥ ३ ॥ सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र ॥ आराध्या। खेवापार ॥ पार मेरे प्यारे ॥ सम. ॥ ४ ॥कहत केवल रिख दिल्लीभी देखी ॥ चांदनी चोकका बजार॥वजार मेरे प्यारे ॥ सम.॥ ५ ॥

॥ उपदेशी—करवा ॥

गुजराले वक्त या आणवणी ॥ गूजराले. ॥ टेर ॥ वहुत बीत गइ थोडी वखत्

रही । चेते क्यों नही मूढ धणी ॥गू ॥ १ ॥ लख चोरासी भमता पायो । नरभव सबमें चितामणी गु. २॥सीख देत सतगुरु तूज साची ॥ ले ले समकित हीरा कणी ॥ गु ॥३ ॥ कहत केवलारिख गुजरालामें । पारणो इकचालीस काठणी गू ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ उपदेश—पद ॥

सुण लेर चतन श्री जिनवाणी । अव-सर आण बणया अमी नीका ॥ सु ॥ टेर॥ पु । पुण्य म नव भव पायो । तीन भवन निर छे अनी टीका॥ तिनकी चाहाय करत सु र नर । समकितबिन नर लागत फीको।सुण ॥ २ ॥ आय नव उत्तम कुल प । आय मि

थो पूर्व पुण्य जीको ॥ येही गमाइ पश्चाताप करेगो। गइ बात नहीं हाथ रतीको ॥ सुण ॥ २ ॥ वार २ सतगुरु समजावे। चेतरे चेतन शुभ मतीको ॥ सुकृत जाण पेछाण प्रभू गुण। देव निरंजन जैन मतीको ॥ सूण ॥ ३ ॥ जीव अजीव और पूण्य पाप है। निरणो आश्रव संवरजी को ॥ निर्जरा कारण निरवद्य करणी। बंध तोड ले मुगत गतीको सूण ॥ ४ ॥ धर्म दया विन सब जग फी-रा। हिंसा करे नर मुढ मतीको ॥ परम पदार्थ चेतन निरगुण। नहीं चेते अज्ञान बुद्धीको ॥ सुण ॥ ५ ॥ देशव्रत और सर्व व्रत ल। येही पदार्थ हे जगतीको ॥ केवलरिख करजोड वीनवे। शुभ भाव हे शुभ गतीको।

सुण ॥ ६ ॥ संमत उगणीसे छप्पन साले । आसोज कृष्ण पक्ष है अती नीको ॥ एकादश गुरु भनू शेहेरमें । वास लीयो है चतुर मासीको ॥ सूण ॥ ७ ॥

॥ राग द्वेष स्वरुप पद ॥

तजो २ रे भविक चित्तलाइ । यह तो राग द्वेश दु ख्वदाइरे ॥ टेर ॥ राग द्वेष दुर्ग नका दाता । एथी पावे घणी असातारे ॥ ॥ त ॥ १ ॥ राग दोय प्रकार सूणीज । ज्याग भेद न्यारा गिण लीजे जी ॥ त ॥ ॥ २ ॥ प्रसस्त राग जब आवे । शुद्ध वस्तु पे प्रम जगावेजी ॥ त ॥ ३ ॥ गुरु शिष्य स्वधर्मी तांइ । धर्म उपकरण प प्यार आइ ।

॥ त. ॥ ४ ॥ तिणसे धर्म मार्ग जीव आवे। पण मुगत जाताँ अटकावे जी ॥ त. ॥ ५ ॥ अप्रमस्त रागे मोह जागे। कुटंब धन प्यारो लागे जी ॥ त ॥ ६ ॥ अब द्वेष सुणो दुःख दाइ। प्रसस्त अप्रसस्त थाइ जी ॥ त. ॥७॥ शिखामण देताँ द्वेष आवे। पापी पे भाव करुर थावे जी ॥ त. ॥ ८ ॥ यह प्रसस्त द्वेष भणीजे। अब अप्रसस्थ सुण लीज़े जी ॥ त ॥ ९ ॥ करे निंदा कुआल चडावे। धरमीने देख दु;ख पावेजी ॥ त. ॥ १० ॥ राग द्वेष प्रकृती अठाइ। ते सुणजो तें चित लाइजी ॥ त ॥ ११ ॥ अनंतानु बंधी अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी संजल चोक जाणी जी ॥ त. ॥ १२ ॥ क्रोध मान माया लोभ चारुं। कही

साल प्रकृनी वाह जी ॥ त ॥ १३ ॥ हास
रानातें भय सोग दुगच्छा । तीन वेद पच्चीस
ए इन्छाजी ॥ त ॥ १४ ॥ स्मपित माहणी
जन अ मे ॥ मषादिक दोष लगावजी ॥
त ॥ १५ ॥ मिश्र माहणी उद जब आव ॥
दवगुरु धर्म काज हिंशा थावे जी ॥ त ॥
१६ ॥ मिथ्या मोहनीने वम पडीया ॥ ते सा
अमेरे नामे चीडीयाजी ॥ त ॥ १७ ॥ यह
रागदषका चाला ॥ छ माइने कर्म अजाला
जी ॥ त ॥ ८ ॥ जा श श्वना सुख चावो
॥ तो दोयान छिटकावो जी ॥ त ॥ १९ ॥
सहर भापाल दश गाहवाणो ॥ उर्गीस अठ वन
ताहा यह नोमें जाणा जी ॥ त ॥ २० ॥
इ मानी कमरठ रत्व ववाणी । मूग स्मज

भवीक हित आणी जी ॥ न ॥ २१ ॥

॥ उपदेशी पद ॥

अरे जीया सोच अपणे मणमें । तुज जा-णा है एक छिनमें ॥ टेर ॥ लख चोंरासी भ मके आयो । मनुष्य करे सदनमें ॥ माता रुद्र पिता शूक भोगवी । उपज्यो है गरभन में ॥ अरे ॥ १ ॥ उंधे मस्तक सहे वेदना । महा अशुची तनमें ॥ पूर्व पुन्यसे वाहिर आ-यो । भूल गयो भजननें ॥ अ ॥ २ ॥ मा-ता दूध पाकेसुख पयो । दिन २ बढत सूख-नमें ॥ जोवन वयमें परण्यां नारी । लाग र-ह्यो विषीयनमें ॥ अ ॥ ३ ॥ वुढापणमें वी.प-तीन घेर्यो । दिन रात जात दुःखन में ॥ तो

साल प्रकृनी थाकु जी ॥ त ॥ १३ ॥ हास
रामार्त भय सोग दुर्गच्छा । तीन वेद पचीस
ए इच्छाजी ॥ त ॥ १४ ॥ रुरुषित माहणी
जय आवे ॥ मदादिक दोष लगावेजी ॥
त ॥ १५ ॥ मिश्र मोहणी उद जब आवे ॥
देवगुरु धर्म काज हिंशा थावे जी ॥ त ॥
१६ ॥ मिथ्या मोहनीने वस पडीया ॥ ते ता
धर्मरे नामे धीडीयाजी ॥ त ॥ १७ ॥ यह
रागद्वेषका थाला ॥ छे माहर्न कर्म जजाला
जी ॥ त ॥ १८ ॥ जो शाश्वता सुख चावो
॥ तो वोयाने छिटकावो जी ॥ त ॥ १९ ॥
सेहर भोपाल देश गादवाणो ॥ उर्ग्गीस अठ सन
माहा वद नौमी जाणा जी ॥ त ॥ २० ॥
इर्कामी कवलरिख याचाणी । सूण समज

भवीक हिन अ.णी जी ॥ न ॥ २१ ॥

॥ उपदेशी पद ॥

अरे जीया सोच अपणे मणमें । तुज जा-
णा है एक छिनमें ॥ टेर ॥ लख चोरासी भ
मके आयो । मनुष्य करे सदनमें ॥ माता
रुद्र पिता शूक भोगवी । उपज्यो है गरभन
में ॥ अरे ॥ १ ॥ उंधे मस्तक सहे वेदना ।
रह्या अशुची तनमें ॥ पूर्व पुन्यसे वाहिर आ-
यो । भूल गयो भजननें ॥ अ ॥ २ ॥ मा-
ता दूध पाकेसुख पायो । दिन २ बढत सूख-
नमें ॥ जोबन वयमें परण्यां नारी । लाग र-
ह्यो विषीयनमें ॥ अ ॥ ३ ॥ बुढापणमें वी.प-
तीन घेर्यो । दिन रात जात दुःखन में ॥ तो

पण धर्मकी वात नचावे । डुब्यो आ नरपनमें ॥ अ ॥ ४ ॥ कहत केवल रिख यह जग झूटा । समज २ पापी मनमें ॥ नरभव है निरवाणको कारण । सुधार ले यह छिनमें ॥ अ ॥ ५ ॥

॥ प्रभातीराग—शिखामण–पद ॥

प्रात ममय तुम उठ भविक जन । आ त्म कारज करीयेरे ॥ टरे ॥ दुल्लभ लाधो म नुष्य जन्मरो ।सुधी श्रद्धा धरीयेरे ॥ वेष नि रजय गुरु निर्लोभी । धर्म दयामें आदरीयेरे ॥ ॥ प्रा ॥ १ ॥ सामायिक शुद्ध मनसे करवां। अशुभ कम दल हरीयरे ॥ नितका चववे नेम चीतारा । सम्वर मागवरियेर ॥ प्रा ॥ ॥ २ ॥

कथा सुणाता कथन नकीजे । प्रमादे नहीं अनूसरीयेरे ॥ मुनी आया सुद्ध भाव धरीने। प्रतिलाभी जग तरीयेरे ॥ प्रा. ॥ ३ ॥ पन्नरे कर्मादान तजीजे । पापसे पिंड नही भरीयेर ॥ साजी साबू लोहो धावडी । वैपार यह परहरीयेरे ॥ प्रा. ॥ ४ ॥ बचन सावद्य विषयी मत बोलो । अनर्था दंड नआचरीयेरे ॥ अनगल नीरे नन्हावो धोवो ॥ कंद मूल न चरी येरे ॥ प्रा. ॥ ५ ॥ अभक्ष आहार बहु बीज. तजी जे ॥ रात्रीभोजन नकरीयेर ॥ दोइ वखत प्रतिक्रमण करके । लागा दोष निवरीयेर ॥ प्रा. ॥ ६ ॥ देशपंजाबमें शेहेर लुधीयामे । पूज्य मोतीचरण पडीयेरे ॥ कहते केवल रिख सुणोभव्यप्राणी । आतमकारजसरीयेरे ॥७ ॥

उपदेशी लावणी

सजोरे क्षपात भाइ । सुधारा की जो है वहाइ ॥ टेर ॥ लक्ष चौरासी को भुगत्या । जनम और मरण करी थीरया । सग सुगुरू की नही पायो । जिन मारगमें नहीं आयो ॥ दुहा ॥ समकित विन यो जीवडो । भम्यो अनत संसार ॥ तारण वालो को नहीं सा । हिरदय ल्यो विचार ॥ मिलत ॥ इ र नरभव का जो जाइ ॥ समकित विन दु ख घणो पाइ ॥ स ॥ १ ॥ काल अननो यों वीत्यो । धर्म विन रह गया यों रीतो ॥ देव और धर्म गुरु वीना । रतन सग तरे ये तीनो ॥ दुहा ॥ विन करमा पसतायगा ॥ पडा समन के मांय ॥ जन्म

जरा और मरण लिटावण ॥ लगे जीय हांहि उपाव ॥ मिलत ॥ सोच हिरदे ध्यान लगाइ। क्या प्रभु कहा सुत्र मांइ ॥ तजो. ॥ २ ॥ वाडा ममत करी भरीया । पापसे जरा नहि डरिया ॥ हर्षसे हिरदा गहवरिया ॥ राग और द्वेष चित धरिया ॥ दुहा ॥ महिमा पुजाका लोलपी । करे न हित वीचार ॥ इंद्रादिकयो होइ जीवडो पुजायो बहु वार ॥ मिलत ॥ पृथ्वी पाणी के मांइ ॥ उपज्यो तेही फिरजाइ ॥ तजो ॥ ३ ॥ मानसे नीची गती पावे के व्यर्थ उम्मर गमावे ॥ सुगणा चित ठाम लावे। पक्ष छोड शिव पंथ धावे ॥ दुहा ॥ उगनीसे छप्पन भला । रुतालकाटेके मांय ॥ केवल-रिखकी वीनती । सुणजो चित लगाय । मि-लत ॥ वैशाख सुद इग्यारस गाइ । वार शु-कर छे सुखदाइ ॥ तजों ॥ ४ ॥

॥ उपदेशी – लावणी ॥

मैं नित्य नमाउ सीस नाभीनंदनका ॥ धन साधु मती वस कीया जो आपणे मनकु ॥ ॥टर यह मन बडा अती चंचल वस नही आवे । जिम ताणु तिम भाग दिशो दिश जावे ॥ इसके वश पडकर प्राणी गोता खावे नर्क निगोदका दु ख येहा वहलावे ॥ जिहां दु ख खमी थर २ धुजाया तनकु ॥ धन ॥ ॥ १ ॥ मानुष्य देह पाइ बडी मुशकलसे भाइ ॥ तन बाल जवानी मुफत एले गमाइ ॥ जब गया बुढापा आग्य मुजे नाही ॥ का नका हट गया जाग पाव नहीं चाले । हाथी म उ नहीं चीज क मस्तक हाले ॥ अब प्रभु भजनका उपाय जरा नहीं चाले । धर

के देवे दुःख के बूढा निहाले ॥ ऐसी विपत में पडी भुला सुदनकु ॥ धन ॥ ३ ॥ मांगे सो चीज नहीं लावे । गाली सुनावे ॥ साठी में नाठी अकल जीभ ललचावे ॥ बेटाबेटी बहु पोता साथे नहीं आवे ॥ इस विध वीते काल । मरण कब आवे । इम जाणीने चेतो कहूं गुणी जनको ॥ धन ॥ ४ ॥ दुनिया में दुःख है जबर जन्म मरनेका ॥ क्या गरीब धनवंत सबकू चलने का ॥ है वीतरागका सरण दुःख टलनेका । नही और कोई उपाय जगसे बचनेका ॥ कहे केवलरिख आगरमें मोक्ष गमनको ॥ धन ॥ ५ ॥ इति ॥

॥मन को शीख—पद॥

अरे मन चेत मेरा मतवाला ॥ दुर्गतका

जड व तालारे ॥मन ॥॥टेर॥ मिथ्या मत जन्म गमायो ।शुद्ध मारगमें नहीं आयो ॥ सद् गुरु विन बहु दु ख पायो॥ इम काले अनत बीतायो रे ॥ म ॥ १ ॥ समकित विन सुखी किम होवे। विन ज्ञान आतम किम जोवे ॥ मूढ विरथा जन्मयो खोवे । तें तो भव २ माहे रोवरे ॥ म ॥ २ ॥ चरित्र तारे-गत चार्रा । तपते हि होवे । निस्तारो ॥ शुद्ध भाव स खवा पारो । जावे पचमी गती मझा-रो रे ॥ म ॥ ३ ॥ दान दिया दरिद्र जावे । शील्सू ऊंची गत पावे॥इम शिव सुख होवे आत्र । त्रिलोकीनाथ गुण गावे रे॥ म ॥ ४ ॥ उगर्णी मे छप्पनजाणो। महा वदी पंचम दिन ठाणा ॥ पिराजपुरमें केवलरिख गाण ॥ जो चन माई पून्य गानारे ॥ म ॥ ५॥ इति॥

॥ उपदेशी गझल ॥

टूक दिलका चश्म खोल भरम कर्म की करो ॥ लख अलख चिदांनद धंद फंद से टरो ॥ टेर ॥ परसंग ममत छोड रूप आपका वरो ॥ अजी निज स्परूप भूल क्यों भर्म जालमें पडो ॥ टूक ॥ १ ॥ अनंत सुख आपे ज्यां को चित न धरों ॥ परसंग दुःख पाय दुर्गत में क्यों पडो ॥ टुक ॥ २ ॥ मिथ्यात्व अंधकारको तो दिलसे परहरो ॥ ज्ञानका प्रकास कर के शांतीमें ठरो ॥ टूक ॥ ३ ॥ मनुष्य जन्म पाय भले काम आचरो ॥ कहेत केवलरिक दुःख दरीयेसे तरो ॥ टूक ॥ ४ ॥

॥ मन समजानेका पद ॥ प्रभाती ॥

क्या अपसोस करे मन मुरख । बीती ताय

दीमाररे ॥ आगकी शुद्ध देख समलजा ॥ह्रो जावो होशीयार रे ॥ क्या ॥ १ ॥ होणहारसो निश्चे होव । अण होणी न होणहाररे ॥ यह निश्चय कर समसा पडको । धरिज को ग्रद धार रे ॥ क्या ॥ २ ॥ संतोषी जगमें सुख पाव । हुवे लोभी आपररे ॥ ले गयो न ले जाव काई । क्यों लोभावे गींवारे ॥ क्या ॥ ॥ ३ ॥ कर २ ममत बहु धन जोड्यो । छोड चल्या परवाररे ॥ उसका मालक होवे दूसरे । खावे आप आग मार रे ॥क्या ॥ ४ ॥ क्यानि पट खल रिद्ध पाइ । उपना नरक मझाररे ॥ इम कवल मनको समजावे ॥ कर नाल्य माम सुखकाररे ॥ क्या ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ कम बलीका पद ॥

राजी हम नगा ए फत्र टले नही एक

समे टाला ॥टेर ॥ देखो ए आदेश्वर स्वामी ॥ एक वर्ष भिक्षा नही पामी ॥ अपणा पोतारे घर जो नामी ॥ आगये गुवालाजी ॥ अर्ज सूणआगये गुवाला ॥ कर्म ॥ १ ॥ सेलडी रस जिनने वेहराया । वर्ष दिवसे जोग जो पाया ॥ गइ भूख त्रपत हुइ काया ॥ शांत जे दयालाजी ॥ अर्ज सूण शांत ॥ कर्म. ॥ २ ॥ देखो नेमीश्वर व्याःवण आये । सब सखीया मिल मंगल गाये ॥ तोरण आये । पशू छुडाये ॥ गये गिरि तज बाला जी ॥ अर्ज. ॥ गय ॥ कम ॥ ३ ॥ पार्श्व प्रभूको कष्ट दिखाया ॥ सट कुमठ मिथ्यातमें छाया ॥ क्षमा घर प्रभुतुर्ते हहटाया ॥ इन्द्र जो गुण वाला, जी ॥ अर्ज इइन्द्र ॥ कर्म ॥ ४ ॥ वीर प्रभूने जोग उठाया तब ॥ इन्द्र केणे को आया ॥ कष्ट बहु थांणे जिनराया ॥ बणु हुं रखवालाजी ॥ अर्ज. ॥

॥ वणु ॥ कर्म ५ ॥वीरकहे आघात न थावे ॥ आप आपणा कीधा पावे ॥ अनारज वेदे कर्म खपावे ॥ कर्मोंकुटाला जी ॥ अर्ज ॥ कर्मों ॥ कर्म ॥ ६ होणहार सो निश्चय होवे ॥ गइ वातको तू कों रोवे ॥ अव ही चेतो निंदे क्यों सोवे ॥ कर्मोका घाला रे देख यह कर्मोका घाला ॥ कर्म ॥ ७ ॥ इम जाणी कर्मोंसे डरीय ॥ जिनेश्वर मार्ग में अनुसरीये ॥ केवलरिखकी शीख हीये धरीये ॥ हे कोइ बुध वालारे ॥ अर्ज सुणो हे कोइ बुध वाला ॥ कर्म ॥ ८ ॥

हैद्राबाद(दक्षिण)में मुनी आगमन

॥ राग वणजारा ॥

भला सत पास मेरे प्यारे । यह भागान गर (हैद्राबाद) गुलजारे ॥ टेर ॥ मुम्बाइ

कीया चौमासा । श्रावककी पूरी आसाजी ॥
हुवा धर्म ध्यान श्रेयकारे ॥ यह ॥ १ ॥ भाइ
पन्नालालजी कीमती । वहु भावे कीनी विनंती
जी ॥ हैद्राबाद न संत पधारे ॥ यह ॥ २ ॥
अब आप कृपा कीजो । यह विनंती चित दी
जोजी ॥ क्षेत्र निकलसी नावारे ॥ यह ॥३॥
जब हुवा भाव मुनीवरका । पण अनुजल इ-
गत पुरीका जी ॥ हुवा चौमासा बासटकारे
॥ यह ॥ ४ ॥ मुळचंद जी टांटीया भाइ ।
सगाति सारु सेवा बजाइजी ॥ सम्प हुवा ती-
नों तडमारे ॥ यह ॥ ५ ॥ मनमाड वैजापुरे
आया । औरंगाबादे सुख पायाजी ॥ जाल-
णासे परभणी पधारे ॥ यह ॥ ६ ॥ नांदेड
इंदुर निजामी ॥ तिहां फागण चौमासी ठा-

मकान मझारे ॥ यह ॥ १३ ॥ तपस्वी केवल
रिखजी मूनी अमुलखरिखजी जी ॥ सुखा
रिखजी। भीलारे ॥ यह ॥ १४ ॥ पहिलां मु-
नीवर नहीं आया ॥ अबखुल्या भाग सवाया
जी ॥ आनंद हर्ष वरत्यारे ॥ यह ॥ १५ ॥
वास बेला तेला अठाइ । पचरंगी दया समाइ
जी ॥ पोसा परभावना बहुतारे ॥ यह ॥ १६
चार कमानकी छब भारी । वसे सोना चांदी
के वेपारीजी ॥ जवेरीयोंकी खुली छटारे ॥
यह ॥ १७ ॥ दिगांबरी श्वेतांबरी मंदिर ।
यह चार कमानके अंदरजी॥धर्म ध्यान किया
मिल सारे ॥ यह १८ ॥ हाथी घोडा रथ ब-
गीया । झटका मोटरकार सजीयाजी ॥ म-
हेबून बादशाह प्यारे ॥ यह ॥ १९ ॥ वस

ते धावन वजारे ॥ जिहां चातुर सबी नरनार जी ॥ रहे तन घने धर्म दीपारे ॥ यह ॥२० उगनीसे त्रेसठ साले । सुदी आसोज एकम बुधवारेजी ॥ करी केवल कौतक लारे ॥ यह ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ इगतपुरीका चौमासा की लावणी॥

अरिहत सिद्ध समरू सदाजी, फांइ आ, चार्य उवझाय ॥ साधु सकल के चरणकू मर, वन्दु सीस नमाय ॥ गुण गाता मुनिवर तणा सर, पातक दुर टल जायजी ॥ गुण कहा लग वरणु, सत वदा हे कवल रिखजी ॥ टर ॥ १ ॥ उगणीसो इकसटकी साले मुम्बाइ कियो चौमास । विचरत आया इ

गत पुरीमें, भव्य पाम्या हुल्लास ॥ सेके का-
ले उपदेश सुणाइ, भवीरी पूरी आसजी ॥
गुण ॥ २ ॥ सुणी उपदेश मुनीवर केरो, मन
मे लोग उमाया ॥ कीनी विनंती चौमासा
की, भिलके वाया भाया ॥ अवसर देखी जा-
णी जासी, ऐसा हुकम फरमायाजी ॥ गुण॥
३ ॥ सेके काल में विचरतास, गया नाशक
शहर मझार ॥ फागण चौमासो उठेही की-
नो हूवो घणो उपकार । केसरबाइ करी द-
लाली, आणी धर्म पे प्यारजी ॥ गुण ॥ ४ ॥
नाशकवाला करी विनंती, सूणो श्री महाराज
॥ दुक्कर चौमासो इगत पूरीको, कठिण घ-
णो छे काज ॥ पहली चौमासो हुयो नहीं
तिहां ॥ पडे घणी वर्षादजी ॥ गुण ॥ ५ ॥

विचरत २ गया मुनीवरजी, 'पालखेड' म
झार ॥ मूलचदजी टांटीया गया ले भायाने
लार ॥इगत पुरीमे करो चौमासो होसी घणो
उपकारजी ॥ गुण ॥ ६ ॥ मानी विनती प
धारीया सरे, इहा तीनु अणगार॥ सताइस गुण
करी दीपता सरे, ज्ञान तणा भंडार ॥ लाल
चदजीकी जागा में, हुवा छे जयजयकारजी गु
॥ ७ ॥ केवलारिखजी मुनीवर यका नित
दत्र व्याख्यान ॥ सुत्र उत्ताराधेनजी वांचे, स
म्याकित्त कौमुदी रास जाण ॥ भिन्न २ कर
समजावे सबने, करार धर्म पछानजी ॥गुण॥
॥ ८ ॥ गुणा तणा महाराज सागर छे म्हासु
कह्या न जाय ॥ धन्य मिटाइ इगत पुरीका,
तीना सप कराय ॥ तपस्या हुइ छे घणी शे

हरमें दीयो अकृत छोडायजी ॥ गुण ॥ ९ ॥
अमोलख रत्न अमोलखरिखजी ज्ञान तणा भं-
डार ॥ वीरसेण कुसुम श्री को, चारित्र कहे
सुख कार ॥ अनमतीयाने घणा समजाया,
क्षमावंत अणगारजी ॥ गुण ॥ १० ॥ सुख
लालजी मुनीवर वंका रहे आप के संग ॥
ज्ञान ध्यान तमस्याके माही, दिन २ चडतो
रंग ॥ वनीत ने ब्रह्मचारी मुनीवर, करे कर्म
सू जंगजी ॥ गुण ॥ ११ ॥ गांव २ का दर-
सण सारु, आया घणा नरनार ॥ घणी तप-
स्या हूइ पजुसणमे वरत्या मंगला चार ॥ सू-
लभ हुया सारा नरनारी हूयो घणो उपगार
जी ॥ गुण ॥ १५ छमछरीका पारणा सरे,
किया मन हूल्लास ॥ स्थानक सामे रेलवाइमे

कियो कपाड़ वास ॥ सामो आयो अशुची पणो हूवो मुनीसे आसजी ॥ गुण ॥ १३ ॥ खाली पटरा भाया मिलने, मुनीवरजी कने आया ॥ कीनी विनती महाराजारी, सहु तण मन भाया ॥ चक्र उपर सु विहार करने, बजार पठमे आयाजी ॥ गुण ॥ १४ ॥ जोग मिल्या छ भाया भागी लीजो काज सुधार ॥ नगर प्रनपाइ इणवखत है मिल्या एसा अण गार ॥ पुनमचंद पाल्याकी विनती, उतारो भवपारजी ॥ गुण ॥ १५ ॥ सम्मत उनीसे या

कच्छ देश पावनकर्ता आठ कोटी मोटी पक्ष के मुनिश्री नागचंदजी कृत.

तपस्वीजी श्रीकेवलऋषिजी महाराजने स्तवन

वीणम वाशोरे वीठल वाप तंमने एदेशी,

श्रुतिदेवीने समरी स्नेह गुनीजनना गुण-गावुं ॥ रसना पावन करवा कारन आत्मने हुलसावुं ॥ सूविदित सगलाए, केवलऋषिजी वंदो॥जंगम तिरथरे, नमता पाप निकंदो एटेक वीर सासनमां शांत स्वभावी गुण आगर वैरागी, सरल स्वभावी सुमता सागर, संवेगी सोभागी॥ सु ॥१॥ श्रष्टाचारी उग्रावेहारी तप

धारी गुणधारी॥ आत्म तारी बोधदातारी, तार्या केइनरनारी ॥ सु ॥ १॥ मुनिगुण धारक महाव्रत पालक टालक विषय विकारा॥ प्रति पालक षट कायजीवाना॥ वारक दुराचारा सु ॥ २ ॥ आगम आम्नायथी धार्या, करी विपुल अभ्यास ॥ अवलोक्या अत्युत्तमग्रथो हृदये धरी उल्हास सु ॥ ४॥शिष्योने सद्बोध दइने, सन्मार्गे वर्तावो॥ देशविदेशे ज्यां ज्यां विचर्या ॥ धर्म ध्वजाफरकावो सु ॥५॥ धन धन मात पिता तुम्हकरा, धनधन्य तुम्ह अवतारो॥ गामकुलने नातने धन धन॥ धन जीवीतजयकारो सु ॥६॥ निधिरस नदेशशी सवंत्सर, माघ मास उदारो ॥ शुद्ध पंचमी रवी नंदवारे नागचंद्रकहे, अव धारो सु ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ दुहा ॥

पिंगल गण जाणूं नहीं । अल्पमति अनुसार ॥
रची अर्पण करूं जेष्टनें । पंडित लीजो सुधार ॥ १ ॥

॥ सामायिकके ३२ दोष ॥

१० मनके दोष—१ विवेक रहित सामायिक करे. २ यशकीर्ती निमितं सामायिक करे. ३ " करूंगा साभाइ तो होवेगा कमाइ" ऐसी इच्छा करे. ४ अभीमान करे. ५ भय-निमित सामायिक करे, ६ सामायिकके फल की इच्छा करे. ७ सामायिकके फलमें संशय करे. ८ क्रोध करे. ९ आविनय करे. १० अप-मान करे. यह १० प्रकारके मनमें विचार करसेने सामायिकमें दोष लगता है.

१० वचनके दोष—१ झूठ बोले २ विगर विचारे बोले ३ श्रद्धाके उत्थापनेका वचन बोले ४ आमिलता वचन बोले ५ नवकारा दि पाठ पुरा न बोले ६ क्लेश झगडे करे ७ चार वी(खोटी)क्या करे ८ अशुद्ध बोले १० गडबडसे बोले एसे १० प्रकारके कुवचन बो लनेसे सामायिकमें दोष लगता हैं

१२ कायाके दोष—१ अजोग आसनसे बैठे, २ आस्थिर आसन बैठे ३ द्रष्टी (आंख) की चपलता करे ४ पापके काम करे ५ भींत प्रमुखका टका लके बैठे ६ वार २ हाथपांव पसारे सकोचे ७ आल्श करे ८ अगुली तथा अग मरोडे ९ शरीरका मैल उतारे १० विं नाक आसन बैठे ११ निद्रा (नींद) लेवे १२

वयावच चाकरी करावे. यह १२ काम कर-
नेसे सामायिकमें दोष लगे.

यह ३२ दोष टालके शुद्ध सामायिक कर
नेसे ९२५६२५९२५ पल्योपम देवताका आ-
युष्य बांधे, और नर्कका आयुष्य कमी करे.
तथा १५ भवमें मोक्ष पावे.

॥ श्रावकके २१ गुण ॥

क्षूद्र १ खराब स्वभाव न होव, सरल गंभीर धै-
र्यवंत होवे २ रूपवंत तेजस्वी पूर्ण अंगवाला
होवे. ३ प्रकृतिका शीतल शांत होवे, सबसे
हिलमिलचले. ४ निंदनीक काम न करे, तथा
उदार प्रणामी होय. ५ किसीके भी छिद्र न
देखे. करूर द्रष्टी न रखे. ६ पापकर्मसे तथा

निवास करे ७ कपट दगाबाजी नहीं करे ८ विचक्षण निघामे समजनेवाले अवसरका जाण होवे ९ लज्जा शरम वाला होवे, १० दया वंत दुसरेकोंदु खी देख करूणाकरे यथाशक्ति साता उपजावे ११ मध्यस्त प्रणामी लुखवृती होवे काम भोगमें अशक्त लुब्ध न होवे १८ भली दृष्टीवाला होवे किसीकाभी बुरा न चिंतवे ११ गुणानुरागी –धर्मको दिपाने-वाले–ज्ञानवत–क्रियापात्र के गुणग्राम करे, बहुमान कर, साता उपजावे १४ न्यायपक्ष धारण करे ख्वाटा जाणे उसे छोडे १५ दीर्घ दर्शी प्रज्ञी विचार वाला होवे १६ विज्ञान वत अच्छी बुरी सब वस्तुको यथा तथ्य जैसा है वैसी पैछाण १७ आपनेसे ज्ञानमें

गुणमें जो अधिक होवे उनकी सेवा भक्ती करे. १८ विनीत सदा नम्र भूत हो रहे, मान नहीं करे, १९ कृतज्ञ—अपनेपे किसीने उपकार किया होय तो उसे भूले नहीं, फेडनेकी इच्छा रखे. २० अपनेको दुःख होकर दुसरेको सुख होवे तोभी परउपकार करे. ७१ लब्ध लक्ष जैसे लोभी धनकी, और कामी स्त्रीकी इच्छा करे. तैसे श्रावकजी ज्ञानादी गुण ग्रहण करनेकी अभीलाषा रखे. सदा नवा ज्ञान ग्रहण करे, अनेक शास्त्रके जाण होवे. यह २१ गुण जिनोमे होवे उनको सच्चे श्रावक कहना.

दुहा-निजात्मकों दमनकर । परात्मको चीन ॥
परमात्मको भजन कर सोहि मत प्रवीन ॥ १॥